बच्चों का इन्द्रधनुष

सितम्बर 2005

हमारी बात

हममें से बहुत से लोग और समाज भाग्यवाद में विश्वास करते हैं। ''भाग्यवाद'' का अर्थ है, हमारे जीवन में जो कुछ घटता है वह 'भाग्य' से निर्धारित होता है। यानी पहले से, कहीं और से, किसी और के द्वारा तय होकर आया है। यदि यह सच है तो क्या हमारे पास स्वतंत्र इच्छा जैसी कोई चीज़ है? क्या हम भाग्य से निर्धारित होते हैं या अपनी इच्छा से और अपने खुद के चुनाव से? और यदि हमारा जीवन के द्वारा पहले से तय हैं तो जो गलतियां हम करते हैं उनके हम स्वयं जिम्मेवार हैं या किस्मत?

समय समय पर मानव ने ऐसे सवाल उठाए हैं। इस दुनिया में दोनों तरह के लोग हैं- ऐसे जो अपने आप पर भरोसा करते हैं, अपने सभी अच्छे/बुरे कार्यों की, अपने व्यवहार की, निर्णयों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेते हैं। दूसरी ओर बहुत बड़ी संख्या में लोग यह चुनाव सितारों पर, ग्रहों पर, हाथ की रेखाओं पर, संख्याओं पर, नाम के अ क्षरों पर (यहां तक कि पिये हुए कप में बची हुई कॉफी की बूंदों के बनाए डिज़ाइन तक पर) चेहरे या माथे के आकार पर, बाजुओं की लम्बाई पर............छोड़ना चाहते हैं। बहुत बार अपनी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेने में डर लगता है- क्या मैं सही निर्णय ले रहा हूं/रही हूं, भविष्य कैसा होगा? और इसलिये अनजान या अज्ञात के भय या असुरक्षा से लोग किसी न किसी आश्वासन या सुरक्षा के लिये भटकते हैं- किसी पर भी विश्वास करने के लिये तैयार होते हैं- तोते द्वारा निक. ाली गई चिट्ठी पर भी...........और इसलिये आसानी से धो खे के शिकार होते हैं। ऐसे बहुत से लोग जो अपना वत. र्मान खुद नहीं सुधार पाए, दूसरों का भविष्य बांचते फिरते हैं, है न मज़े की बता?

यह चुनाव भी हम सबके पास है कि हम उपर बताए दो तरह के लोगों में से किस तरह का इन्सान बनना पसन्द करेंगे। डरा हुआ या आत्मविश्वासी? अपनी किस्मत खुद गढ़ने वाला/वाली या दूसरों की भविष्यवाणियों पर विश्वास कर उसपर अमल करने वाला/वाली?

बहुत प्यार सहित,

अंशुमाला

बच्चों का इन्द्रधनुष

मासिक, वर्ष 1, अंक 6, सितम्बर 2005

इस अंक में...

कहानी

सलाहकारः

गौतम रे, के. कृष्णकुमार, डॉ० एम. पी. परमेश्वरन, अरविन्द गुप्ता, डॉ० आर. रामानुजम, डॉ० विनोद रायना, डॉ० विवेक मान्टेरियो, डॉ० कुलदीप तंवर, कांशीनाथ चैटर्जी, डॉ० टी. वी. वेंकटेश्वरन

सम्पादक : अंशुमाला गुप्ता

इन सबको विशेष धन्यवाद :

सीताराम, पद्मा वेंकटरमन, अवनि गुप्ता, अरविंद गुप्ता, अनुरिता सक्सेना, पूनम सिंह, रोहिणी मुत्तुस्वामी, प्रकाश मूर्ति, निर्मला चौहान, विवेक मान्टेरियो, प्रतिमा शर्मा, शारदा खन्ना, कमल हरनोट

चित्रांकनः सीताराम, रामबाबू, सौरव महापात्र,

पत्र व रचना भेजने का पता :

इन्द्रधनुष, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,

तीर्थ निवास, इंजन घर, संजौली, शिमला-6

फोनः 0177-2842972, 2640873

फैक्सः 0177-2645072

मोबाइलः 9418000730

पत्रिका लगवाने के लिये इनको लिखें :

भीम सिंह

पताः हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति
जिला परिषद भवन,

जेल रोड, मंडी, हि० प्र० - 175001

एक प्रति का मूल्यः 10 *रुपए*

व्यक्तिगत वार्षिक शुल्कः 100 *रुपए*

संस्थागत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*

बाहरी देशों में वार्षिक शुल्कः $ 20

हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा तैयार

अंशुमाला गुप्ता द्वारा अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के लिये प्रकाशित तथा जय ऑफसैट प्रिंटर्स, चंडीगढ़ द्वारा मुद्रित

पद्मा के पन्ने

हर बार लेखिका और वैज्ञानिक टी. वी. पद्मा तुम्हारे लिए कुछ न कुछ लिखती हैं। इस बार वे टिंकू की मजेदार साइकिल यात्राओं की कथा आगे बढ़ा रही हैं। पिछले अंकों में तुमने पढ़ा था कि किस प्रकार टिंकू को एक पुरानी जादुई साइकिल मिलती है। टिंकू और किट्टी साइकिल अंडमान की यात्रा पर निकलते हैं। वहां टिंकू चोरी छिपे मगरमच्छ का शिकार करने वालों को छिपकर देखता है। परन्तु तभी उसका पांव फंदे में फंस जाता है और पेड़ से उल्टा लटक जाता है। — सम्पादक

टिंकू गया अंडमान

अन्धेरे में उलटे लटकने में ज्यादा मजा नहीं था। जंगल रात की आवाज़ों से भर गया था–टहनियों का टूटना और जानवरों का घास में चलना।

टिंकू शान्त रहने की कोशिश करने लगा। ''नहीं, यहां पर कोई राक्षस नहीं है। मैं घबराऊँगा नहीं। मैं निकल जाऊँगा।'' उसने सोचा। अपने को ऊपर उठाने की उसकी कोशिश से काफी खड़खड़ हो रही थी। उसने उस आदमी को नहीं देखा जो चुपके से उसके पीछे आकर खड़ा हो गया।

''आ–आ–ह'' एक आवाज़ चिल्लाई
''आ–आ–ह'' टिंकू चिल्लाया।

''अब तो मैं मर गया। यह उन शिकारियों में से एक है।'' उसे लगा उसके पैर पर किसी ने संकोच के साथ हाथ रखा। वह आदमी एक ऐसी भाषा में बोल रहा था जो टिंकू ने पहले कभी नहीं सुनी थी।

टिंकू हाथ पांव पटकने लगा और लात मारने लगा। फिर वह आवाज हिन्दी में बोली।

''घबराओ मत, मैं तुम्हें जाने दूंगा।'' वह बोली। फिर उसे हल्के से छोड़ दिया गया।

टिंकू ज़मीन पर बैठ कर अपने दुखते टखने को सहलाते हुए अपने बन्दीकर्ता को देखने लगा। वह एक छोटा लड़का था। उसके बाल बहुत घुंघराले थे और वह एक लुंगी पहने हुए था। उसने एक हाथ में भाला पकड़ा हुआ था।

''नमस्ते'', वह लड़का बोला। ''तुम यहां क्या कर रहे हो?'' टिंकू ने उसे समझाया कि वह दूर से आया एक यात्री है, जो जंगल में घूम रहा था और गल्ती से जाल में फंस गया।

लड़के ने मुस्कुरा कर सिर हिलाया। ''मैं एक ओन्गे हूं'' वह बोला। ''मैं ओन्गो के आरक्षित क्षेत्र में रहता हूं, जो यहां से कुछ मील की दूरी पर है। एक दिन मैं लम्बी सैर करने निकला, तो मैंने खाड़ी में एक नाव खड़ी देखी। मुझे यह जानने की जिज्ञासा हुई कि वह किसकी है। कल जब मैं वापस आया तो मुझे पता चला कि उसके मालिक मगरमच्छ के शिकारी हैं। मैंने रात में रुक कर उन्हें फन्दे से पकड़ने की सोची अगर मैं पकड़ पाया तो। मैंने गलती से तुम्हारे कदम उनके समझ लिये, इसलिये पीछा किया और उनकी जगह तुम्हें पकड़ लिया।''

वह हल्के से हंसा, अपने सफेद दांतों को दिखाते हुए जो हल्की चांदनी रात में चमक रहे थे।

''मैंने भी उनको देखा है। अगर मैं कर सका तो। मैं उन्हें पकड़ने में तुम्हारी मदद करूंगा । ''ठीक है, तब मेरे पीछे आओ, बिना शोर मचाये।'' ओन्गे लड़के ने सावधान किया।

टिंकू को उस लड़के की जानकारी पर आश्चर्य हुआ। वह बिना आवाज़ किये नंगे पैर बहुत तेजी से चल रहा था। टिंकू उसके मुकाबले कहीं ज्यादा फूहड़ और धीमा था। लड़के ने शिकारियों के पद चिन्हों को फिर से ढूंढ लिया।

''वह कितना होशियार है।'' टिंकू ने सोचा। ''ऐसा लगता है कि जंगल उसे गोपनीय संकेत बता रहा है, जबकि मैं तो अकेले यहां पर कभी भी नहीं बच पाता।''

''वे अपनी नाव पर जा रहे हैं,'' वह लड़का फुसफुसाया। ''हम आगे निकल जायेंगे।

मैं एक छोटा रास्ता जानता हूं। तुम उनकी नाव में चढ़ जाना और उसे खोल देना, ताकि वे भाग न सकें। मैं उनके रास्ते में कुछ फन्दे लगा दूंगा और उन्हें पकड़ने की कोशिश करूंगा।''

एक बड़ी सी नाव खाड़ी के तट पर छाया सी दिख रही थी। टिंकू नीचे झुका और उसकी तरफ दौड़ा। तभी गड़बड़ हो गई। और फिर वह अचानक लड़खड़ा गया और एक जोर की आवाज़ के साथ नीचे गिर पड़ा।

कोई चीज़ सरसरा कर उसके कानों के पास से गुजर गयीं। गोलियां! आदमियों के पास बन्दूकें थीं। उन्होंने उसे देख लिया था। टिंकू ज़मीन पर सपाट लेट गया और गोलियां उसके चारों ओर की मिट्टी को उड़ाने लगीं।

तभी उसने किट्टी को सुना, अच्छी प्यारी किट्टी।
''टिंकू, मैं आ रही हूं।'' वह चिल्ला रही थी।
अगले कुछ मिनट काफी शोरशराबा और आपाधापी रही। एक जोरदार धमाके से गिरने की आवाज आयी, फिर सन्नाटा।

जब टिंकू ने अपना सिर उठाने की हिम्मत की तब सब कुछ शान्त था। फिर उसने देखा कि रास्ते में एक बड़ा पेड़ गिर गया है।

''सब कुछ नियन्त्रण में है।'' किट्टी बोली
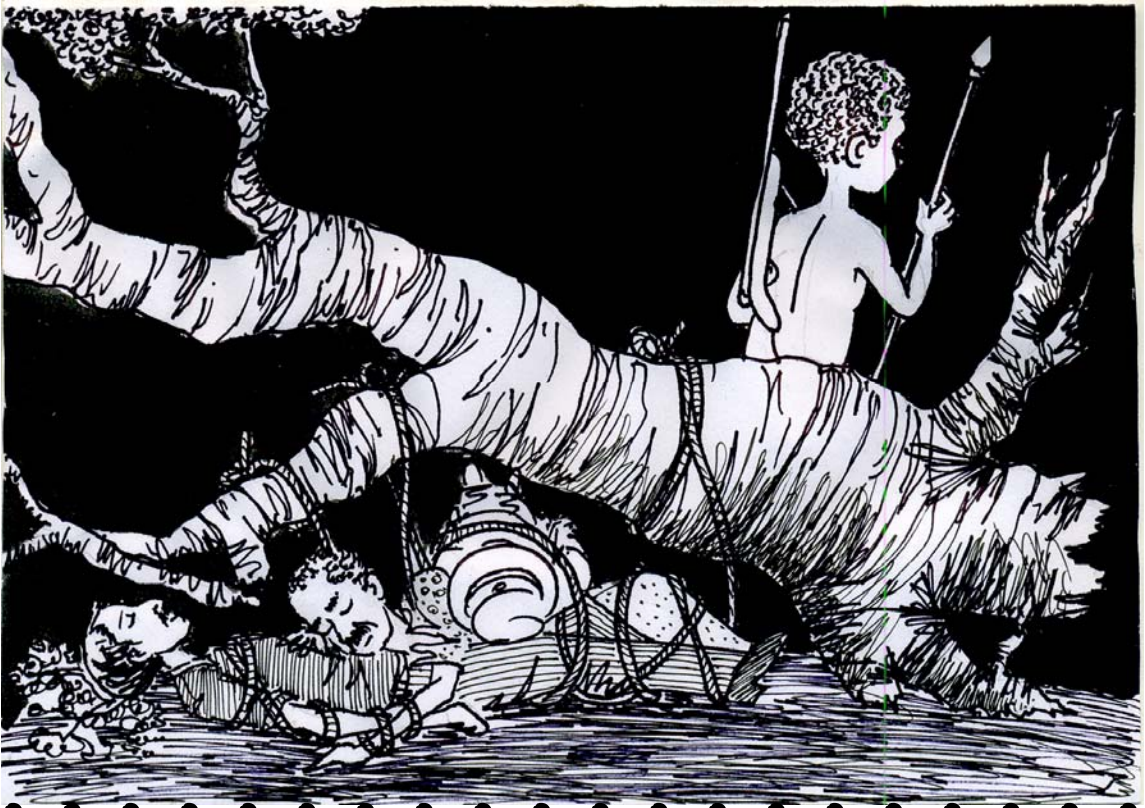
और उसने उस ओन्गे लड़के को टिंकू के बगल में उतार दिया।
''हमारे लिये अच्छा हुआ कि वह पुराना पेड़ सही समय और सही जगह पर गिरा। उसकी शाखाओं ने दोनों शिकारियों को बेहोश कर दिया। तुम्हारे इस दोस्त ने फुर्ती से उन्हें बान्धा और उनकी बदूकें छीन लीं। क्या मैं इसे आरक्षित क्षेत्र में वापस ले जाऊं? ये वहां से पुलिस और तट रक्षकों को रेडियो करके बुला लेगा।''
''धन्यवाद,'' टिंकू ने उस लड़के से कहा।
''धन्यवाद, तुम्हें भी,'' लड़का पलट कर हंसा। ''वापसी की यात्रा के लिये शुभकामनाएं। कभी फिर से मुझसे मिलने आना, दिन के समय। मैं तुम्हें आस-पास घुमाऊंगा।''

आधे घन्टे में किट्टी वापस आ गई और वे घर की तरफ चल पड़े।

''टिंकू, तुम वाकई बदबू कर रहे हो। वह सुंदरी की मिट्टी बहुत बदबूदार है।''

''ओह, शिकायतें बन्द करो, किट्टी। ये ओन्गे कौन हैं?''

''ये उन बहुत से कबीलों में से एक हैं जो कभी अन्डमान के एक बड़े हिस्से में रहते थे। इनमें से बहुतों की तब मृत्यु हो गई जब वह उन बीमारियों का सामना नहीं कर पाये, जो विदेशी अपने साथ लाये थे। अब इनमें से 200 से भी कम लोग बचे हैं। वे अब आरक्षित क्षेत्रों में रहते हैं।''

''अमेरिकन रेड इन्डियन्स की तरह?''

''हां टिंकू। यह काफी दुखद है क्योंकि इन्होंने अपना आत्मसम्मान और अपने परम्परागत जीने के तरीकों को खो दिया है। हमने अपने आपको प्रगतिशील और इनको प्राचीन और पिछड़ा हुआ बता कर इनका आत्मविश्वास छीन लिया है। बाकी और भी बहुत से कबीलों की संख्या बहुत कम रह गयी है और 'अकाफी' की तरह कुछ तो खत्म हो गए हैं। सिर्फ वही कबीले अपनी सभ्यता को बचा पाये जिन्होंने दोस्ती नहीं की और जिन्होंने उपनिवेशियों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखे।''

''दोस्ती न करने से तुम्हारा क्या मतलब है, किट्टी?''
''जो भी उनकी भूमि में बिना आज्ञा घुसता है वे उसे मार देते हैं। जरावा कबीला एक उदाहरण है जिन्होंने हमारी दुनिया के साथ बहुत कम सम्पर्क रखा है।''

''मैं उन्हें बहुत दोष नहीं देता हूं, किट्टी। जब हम सभ्यता और प्रगति के अपने विचार दूसरों पर थोपें, हम असल में उनपर क्रूर और हिंसक हो रहे होते हैं, चाहे हमारी ऐसी मंशा न भी हो। यह हिंसा किसी को तीरों से मारने से अलग तरह की हिंसा है, लेकिन है यह भी विनाशकारी।''

अगले अंक में जारी

नानी मां, ओ नानी मां,
बात हमें ये बतलाओ
चांद मामा क्यों लगता,
भेद हमें ये समझाओ

हम रहते इस धरती पर,
चांद वहां आकाश में
कभी न भेजी मां ने भी,
राखी उनके पास में
कैसे उनसे रिश्ता ये,
बना हमारा हमजोली,

बच्चों की ये बातें सुन,
नानी उनसे यूं बोलीं

धरती को हम कहते मां,
चांद उसका भाई है
चांद को मामा इसलिए,
दुनिया कहती आई है

हर प्रसाद रोशन, नगर पालिका
परिषद, हल्द्वानी।

आओ खोजें

–विवेक मान्टेरियो

पिछले महीने हमने देखा कि कैसे हम एक शक्तिशाली सौर टेलीस्कोप एक छोटे से शीशे, अंधेरे कमरे और एक बड़ी सी प्लास्टिक बॉल को रेत या मिट्टी से भर कर बना सकते हैं।
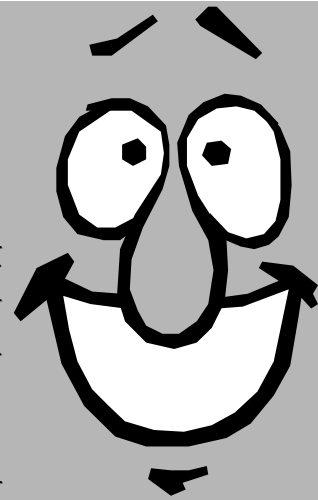
मैंने तुमसे कहा था कि इस सौर टेलीस्कोप से सूर्य की एक बड़ी छवि बनाना जिससे कि तुम सूर्य पर धब्बे देख सको। मैंने तुमने यह भी कहा था कि तुम इन्द्रधनुष को लिख कर यह विवरण दो कि तुमने क्या देखा। मैं इस लेख में तुम्हें यह बताने की सोच रहा था कि सौर धब्बों को देख कर तुम क्या जान सकते हो। पर एक समस्या है। अभी तक हमें किसी ने अपने प्रयोग के बारे में लिख कर नहीं भेजा है। किसी ने हमें यह नहीं बताया है कि क्या वे सूर्य की छवि और धब्बों को देखने में सफल रहे या असफल। तो अगर मेरे किसी पाठकों ने भी सूर्य के धब्बे नहीं देखे हैं, तो फिर यह लिखने से क्या फायदा कि हम सूर्य के धब्बों से क्या पता लगा सकते हैं। इस कारण से मैंने तय किया कि मैं कुछ दूसरे आसान प्रयोगों के बारे में लिखता हूं जो तुम अपनी बड़ी रेत से भरी प्लास्टिक गेंद से कर सकते हो। मैं सूर्य के धब्बों के बारे में तभी लिखूंगा जब तक मुझे कम से कम एक पत्र नहीं मिल जाता जो मुझे तुम्हारे गेंद और शीशे वाले सौर टेलिस्कोप के बारे में बताए। तब तक, दो और आसान और रोचक प्रयोग हैं जो हर कोई कर सकता है।

प्रयोग 1 : एक बड़ी प्लास्टिक की गेंद लो, जो आसानी से किसी भी खिलौने की दुकान पर मिल जाएगी। किसी हार्डवेयर स्टोर से एक सीधी, 30 सेंटीमीटर लम्बी, अल्यूमिनियम या प्लास्टिक की पाइप खरीदो। अगर तुम्हें एक धातु या प्लास्टिक की नली न मिले, तो कोई उपयुक्त विकल्प ले लो– जैसे करीब 1 फुट लम्बा बांस। (यह नली पतली और लम्बी होनी चाहिये और ऐसी जिससे तुम उसके जरिये रात में आकाश में तारे देख सको।) तेज गरम चाकू की मदद से प्लास्टिक की गेंद के दोनों ओर छोटे छेद बनाओ। खोखली नली इस गेंद के जरिये पार कर दो ताकि नली के

दोनों सिरे गेंद के दोनों ओर बाहर निकले रहें। गेंद को रेत से भर कर खुले छेदों को चिपकने वाले टेप से बन्द कर दो। नीचे के आधार के लिये कोई कप या छल्ला इस्तेमाल करो।
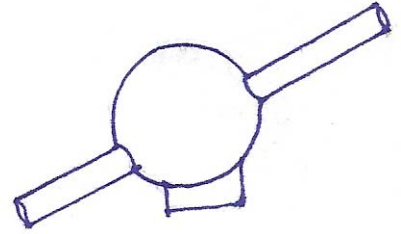
रात के समय बाहर खुले में जाकर अपना यन्त्र किसी ऊंचे स्टूल पर उसके छल्ले वाले आधार पर रख दो। इसे एक टेलिस्कोप या बन्दूक की नली की तरह इस्तेमाल करके, ट्यूब के जरिये देखते हुए किसी तारे की ओर अपनी दृष्टि केन्द्रित करो। करीब पन्द्रह मिनट बाद, बिना नली को हिलाए, उसके जरिये फिर से देखो। अब तुम्हें वह तारा नज़र नहीं आता। ऐसा क्यों?

प्रयोग 2: उत्तर की ओर देखो और आकाश में ध्रुव तारे को पहचानो। इसके बाद अपने यन्त्र को ध्रुव तारे की ओर इस तरह केन्द्रित करो कि तुम्हें ट्यूब से ध्रुव तारा नजर आए। करीब 15 मिनट बाद ट्यूब के जरिये फिर देखो, बिना गेंद के आधार को जरा भी हिलाए। तुम्हें ध्रुव तारा अभी भी दिखाई देगा।

इस ट्यूब से ध्रुव तारे को 1 घंटे बाद, 2 घंटे बाद, 25 घंटे बाद, 49 घंटे बाद, तीन दिन या तीन हफ्ते या तीन महीने बाद देखो- गेंद को अपने आधार पर जरा भी हिलाए बिना-तुम्हें ध्रुव तारा हमेशा दिखाई देगा।

इसका कारण यह है कि ध्रुव तारा आकाश में बिल्कुल भी नहीं हिलता है। (असल में यह बहुत ज़रा सा हिलता है, जो तुम्हें मुश्किल से ही दिखे, पर तुम शायद इस हरकत को एक बहुत पतली ट्यूब से देख सको)।

आकाश में सभी तारे और ग्रह चलते हैं, सिवाय ध्रुव तारे के। क्यों?

अब अगली चीज़ जो तुम्हें करनी चाहिये वह यह कि उस कोण को नापना जो क्षितिज से ऊपर ध्रुव तारा बनाता है। क्योंकि ध्रुव तारा हिलता नहीं, यह कोण स्थिर है। यह बदलता नहीं। यह कोण उस स्थान की अक्षांस (Latitude) है जहां तुम रहते हो। अगर तुम शिमला में हो, या मंडी में हो, तुम अपनी अक्षांस को नाप सकतो हो, केवल उत्तरी क्षितिज से ऊपर ध्रुव तारे का कोण नाप कर। यह कोण तुम कैसे नापोगे? यह हम अगले अंक में चर्चा करेंगे, जब हम यह भी सीखेंगे कि एक geosynchron कैसे बनाएं।

दायें और बायें दिमाग का झगड़ा

राजगोपाल नारायण, सुन्दर राजन

किसी कुर्सी पर बैठो। अपना दायां पैर जमीन से उठाओ और घड़ी की सुई की दिशा में हवा में घुमाते हुए गोले बनाओ। अब यह करते करते, अपने दायें हाथ की उंगली से '6' की आकृति हवा में बनाओ। तुम्हारा पैर तुरन्त अपनी घूमने की दिशा उलट देगा (घड़ी की सुई से उल्टी दिशा) और तुम कुछ नहीं कर पाओगे।

ऐसा क्यों होता है? हमारा दिमाग दो अलग हिस्सों में बंटा है–दांया और बायां। शरीर का बायां हिस्सा दिमाग के दाएं हिस्से से नियन्त्रित होता है, तथा दायां बाएं से। दिमाग के बाएं हिस्से का काम है तर्क क्षमता देना। दाहिने का काम है बोली तथा भावनाओं को संचालित करना।
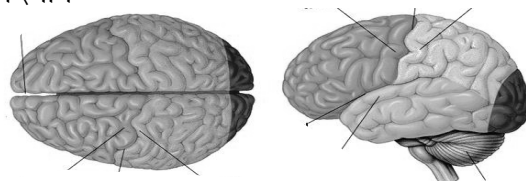
जब तुम दाहिना पैर उठाकर उसे घड़ी की सुई की दिशा में घुमाते हो, इसके लिये निर्देश दिमाग के बाएं हिस्से से आ रहा है। अब जब तुम हाथ से 6 की संख्या बनाने लगते हो तो, अब भी बायां दिमाग ही इसे संचालित कर रहा है। परन्तु 6 की संख्या घड़ी की सुई की उल्टी दिशा में बन रही है। बाएं दिमाग को यह संदेश मिलता है और वह सीधे इसे तुम्हारे दाएं पैर को भी भेज देता है। पैर अपनी घूमने की दिशा फौरन उलट देता है।

दिमाग के बारे में एक और रोचक बात!

क्या, तुम जानते हो कि ज्यादातर पुरुष एक बार में अपने दिमाग का एक हिस्सा ही प्रयोग कर सकते हैं? जबकि महिलाएं दोनों हिस्सों को एक साथ इस्तेमाल कर सकती हैं, जिससे वे भावनाओं और तर्क क्षमता दोनों को एक साथ संभाल सकती हैं। कई क्षमताओं में महिलाएं वास्तव में पुरुषों से आगे हैं, लेकिन यह और बात है कि दुनिया इसे देख नहीं पाती।

उफनती गैसों का मज़ा!

क्या तुमने कभी सोचा कि आटे में खमीर बनने पर वह क्यों फूल जाता है? या फिर डबलरोटी या केक में छेद कैसे हो जाते हैं? या फिर कोल्ड ड्रिंक में उफनते हुए बुलबुले कहां से आते हैं। इन सबका एक ही उत्तर है– कार्बनडाई आक्साइड गैस। कोल्ड ड्रिंक में इस गैस को दबाव डाल कर घोला गया होता है। ढक्कन खुलते ही दबाव कम हुआ और गैस ढेर सारे बुलबुलों में बाहर भागी (क्योंकि उसे पानी में घुलना पसंद ही नहीं। बहुत थोड़ी कार्बनडाइआक्साइड अपने आप पानी में घुलती है।) केक या आटे में बेकिंग पाउडर या खमीर यह गैस छोड़ते हैं। यह गैस आटे या घोल को फुलाकर उसे नर्म बनाती है।

आओ इस गैस के मजे लेते हैं। बनाते हैं: उफनने वाला ज्वालामुखी !

चिकनी मिट्टी या आटा गूंथ कर उसका एक छोटा पहाड़ बनाओ। ध्यान रहे इसके मुंह में थोड़ा गहरा छेद होना चाहिये। इसे धूप में सुखा लो। इसे कहीं जमीन पर या गत्ते पर रख लो। अब इसके छेद में खाने वाला सोडा भर दो।

जब भी तुम्हें ज्वालामुखी फटता दिखाना है, इसके मुंह पर सिरका उंड़ेलो। तुरंत ही ऊफनता हुआ 'लावा' उसके मुंह से बहने लगेगा। अगर सिरके में थोड़ा सा खाने वाला लाल रंग मिला दो तो देखने में और भी मज़ा आएगा।

अगर ज्वालामुखी पहाड़ नहीं बनाना चाहते हो, तो एक कांच के गिलास में 1–2 चम्मच खाने वाला सोडा डालकर उसमें थोड़ा सिरका उड़ेल कर उफनता हुआ देखो। इस रासायनिक क्रिया में उफनती हुई गैस कार्बनाडाइआक्साइड ही है।
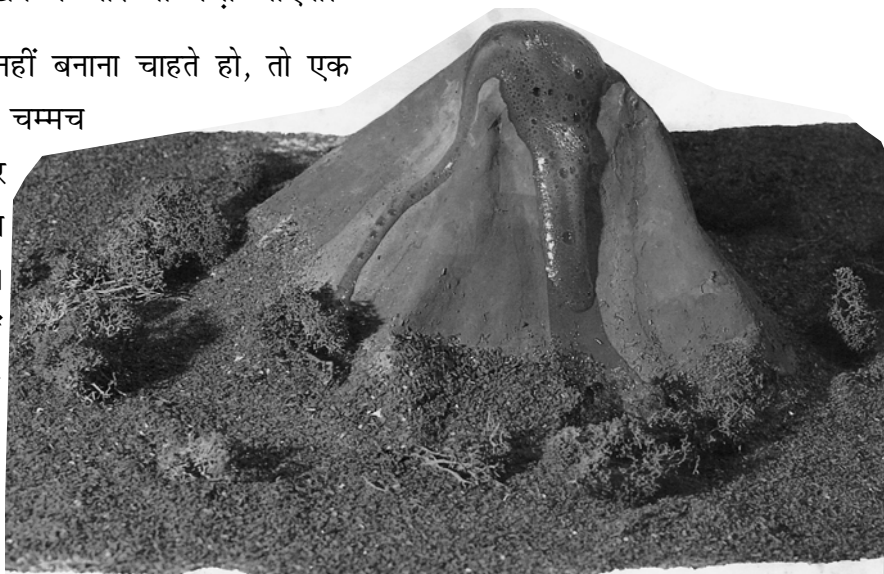
रहस्यमय संदेश

पुराने ज़माने में गुप्त संदेश लिखने के लिये अदृश्य स्याहियों का इस्तेमाल किया जाता था। इनमें प्याज का रस और दूध भी इस्तेमाल होते थे। लेकिन हम केवल नींबू का रस इस्तेमाल करेंगे।

एक नींबू का रस एक प्याली में निचोड़ लो। फिर किसी डंडी या नोक से कागज़ पर बड़े बड़े साफ अक्षरों में अपना संदेश इस रस से लिखो। जैसे ही यह रस सूखेगा, तुम्हारा कागज बिल्कुल कोरा लगने लगेगा। अपने दोस्त/ सहेली को कहो कि वह गुप्त संदेश पढ़ने के लिये इसे गर्म करके देखें।

कागज को गर्म करने के लिये या तो इसे मोमबत्ती की लौ के ऊपर फिराना पड़ेगा (जल्दी जल्दी चलाते हुए ताकि वह जले न)। या फिर कागज पर इस्तरी भी की जा सकती है या इसे एक मिनट के लिये गर्म ओवन में रखा जा सकता है। गर्मी से तुरन्त तुम्हारा गुप्त संदेश उभर आएगा!

यह क्यों होता है? क्योंकि नींबू के रस का पानी सूख जाता है और बाकी बचा हुआ पदार्थ हवा की आक्सीजन के साथ मिल कर भूरे रंग का पदार्थ बनाता है। इसे आक्सीकर (Oxidation) कहते हैं। कभी कभी प्रैस करते वक्त कपड़े के भूरे होने का भी यही कारण है।

1. 17 तीलियों से यह आकृति बनाओ
(क) 5 तीलियां इस तरह से हटाओ कि केवल 3 चौकोर बचें।
(ख) 6 तीलियां ऐसे हटाओ कि केवल 2 चौकोर बचें।

2. 12 तीलियां इस्तेमाल करके यह आकार बनाओ।
(क) 4 तीलियां ऐसे हटाओ कि केवल 3 त्रिभुज बचें।
(ख) 4 तीलियां खिसकाकर कहीं और ऐसे लगाओ कि 3 त्रिभुज बनें।

3. 9 तीलियों से यह आकृति बनाओ।
(क) 2 तीलियां हटाकर 3 त्रिभुज बनाओ।
(ख) 3 तीलियां हटाकर केवल 1 त्रिभुज बनाओ।
(ग) 6 तीलियां हटाकर 1 त्रिभुज बनओ।
(घ) 4 तीलियां हटाकर केवल 2 त्रिभुज बनाओ।
(ङ.) 2 तीलियां हटाकर 2 त्रिभुज बनाओ।

4. 8 तीलियों और 1 बटन से यह मछली बनाओ। अब इसमें से 3 तीलियां और बटन हटाकर कहीं और लगाओ जिससे मछली उल्टी दिशा में तैरने लगे।
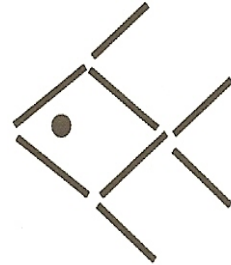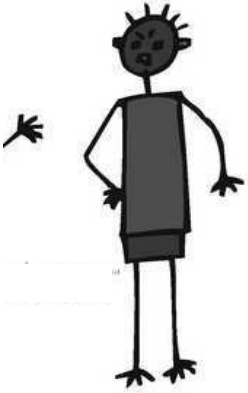
5. एक अपराधी को मौत की सजा मिली है। उसे 3 कमरों में से एक का चयन करना है। पहला कमरा धधकती आग से भरा है। दूसरे में भरी बंदूकों के साथ कातिल बैठे हैं और तीसरे में शेर भरे हैं जिन्होंने तीन साल से कुछ नहीं खाया है। अपराधी के लिए कौन सा कमरा सबसे सुरक्षित है?
6. दो प्लास्टिक के जग पानी से भरे हैं। अब तुम इस पानी को एक बड़े ड्रम में कैसे डालोगे ताकि तुम यह बता सको कि कौन सा पानी किस जग से आया है?
7. ऐसी कौन सी चीज है जो खरीदते समय काली है, इस्तेमाल करते समय ल ा ल है और बाद में फेंकते समय सलेटी है ?

रागिनी दीदी ने मुझे एक कागज की पट्टी दी और कहा– 'इस पट्टी को कैंची की एक काट से तीन टुकड़ों में काट दो।

मैंने कहा– 'असम्भव, यह नहीं हो सकता।' रागिनी दीदी मुस्कुराई और उन्होंने एक पल में मेरी आंखों के सामने ऐसा कर दिखाया। और मैं आखें फाड़कर देखता रहा। क्या तुम ऐसा कर सकते हो? कोशिश करो! अगर नहीं हो पाए समस्या का हल तो इसी अंक में कहीं खोजो।

थोड़ी देर बाद रागिनी दीदी की आंखें फिर शरारत से चमकने लगीं। उन्होंने कागज की एक पट्टी ली और कहा इसे इसकी किनारी पर खड़ा कर दो।
'बिना पकड़े? और क्या वह खड़ी ही रहनी चाहिये?' मैं देखना चाह रहा था कि कहीं वह मुझे उल्लू तो नहीं बना रही। परन्तु उसने कहा– 'हां, बिना पकड़े उसे लगातार अपने किनारे पर खड़ा करना है।' और मैं फिर उलझ गया। मैं तो नहीं कर सका और थोड़ी देर में हंसते हुए दीदी ने कर दिया। पर क्या तुम ऐसा कर सकते हो? अगर न कर पाए तो हल को इसी अंक में कहीं खोजो।

अब्राहम लिंकन का पत्रः अपने पुत्र के शिक्षक के नाम

उसे सीखना होगा मैं जानता हूं,
कि सभी लोग सही नहीं होते,
न ही सच्चे होते हैं।
पर उसे यह भी सिखाना
कि हर दुष्ट के लिये एक ऊंचा इंसान भी होता है,
कि हर स्वार्थी राजनीतिज्ञ के सामने
एक समर्पित नेता भी हुआ करता है..........
उसे सिखाना कि हर दुश्मन के आगे
एक दोस्त भी होता है

अगर कर सको तो
उसे ईर्ष्या के परे ले जाना
और जीवन की सहज मुस्कान का रहस्य समझाना।

उसे शुरू में ही सिखाना कि
दूसरों पर दादागिरी करने वालों को
हराना सबसे आसान होता है........
अगर कर सको तो,
किताबों के अंदर छिपा कौतुक, उसे दिखाना
पर उसे शांत समय भी देना
ताकि वह आसमां में पंछियों के
धूप में फिरती मधुमक्खियों के
और हरी पहाड़ियों पर उगते फूलों के
अनन्त रहस्य के बारे में सोच सके।

स्कूल में उसे सिखाना
कि असफल हो जाना
धोखा देने से कहीं अधिक सम्माननीय है.............
उसे सिखाना अपने विचारों
पर भरोसा रखना
जब सब उन्हें गलत कहें
तब भी
उसे सरल लोगों के साथ सरल होना सिखाना
और कठोर के साथ कठोर।

कोशिश करना मेरे बेटे को वह मजबूती देने की
जिससे यह भीड़ के पीछे न चले
जब सब एक ही भेड़चाल में चल रहे हों......
उसे सिखाना कि वह सबको सुने
पर उसे यह भी बताना कि वह
सच की छलनी से हर चीज को छानकर
केवल वही स्वीकार करे जो अच्छा निकले।

यदि सिखा सको तो सिखाना
कि वह कैसे हंसे जब वह उदास हो............
उसे सिखाना कि आंसुओं में कोई शर्म नहीं
निन्दकों को हंस कर टालना
और बेहद मीठी बातों से आगाह होना.......
उसे सिखाना अपने बाहुबल और बुद्धि
को सबसे बड़े पारखी को बेचना
परन्तु कभी भी अपने हृदय और आत्मा
को बिक्री की वस्तु न बनाना।

उसे सिखाना वह शोर करने वाली भीड़
की ओर से कान बंद करके
कैसे उठ खड़ा होकर लड़ सके
यदि वह सोचता हो वह सही है।
उससे कोमलता से पेश आना
पर लाड़ में न चिमटाना
क्योंकि केवल आंच में तप कर ही
खरा इस्पात बन सकता है।

उसे इतना साहस देना कि
वह अधीर हो सके।
और उसे इतना धैर्य देना
कि वह साहसी हो सके
उसे हमेशा सिखाना
अपने ऊपर असीम विश्वास रखना
क्योंकि तभी उसका मानवता पर
असीम विश्वास बन पाएगा।

यह एक बहुत बड़ा कार्य है
पर देखो कि तुम कितना कर सकते हो.........
वह एक बढ़िया बंदा है,
मेरा बेटा!

अनुवाद: अंशुमाला गुप्ता

क्या पीपल के पेड़ के नीचे नहीं सोना चाहिये?

–रोहिणी मुतुस्वामी

अक्सर बुजुर्ग हमसे कहते हैं कि पीपल के पेड़ के नीचे नहीं सोना चाहिये। क्यों? क्योंकि पेड़ पर भूत रहते हैं जो तुम्हें खा जाएंगे। पर क्या सचमुच हमें किसी पेड़ के नीचे सोना चाहिये या नहीं?

पेड़-पौधे बहुत अद्भुत जीव हैं। जब सूरज की रोशनी मौजूद हो, वे कार्बन डाइऑक्साइड और पानी के साथ अपना भोजन बना सकते हैं। तुमने पढ़ा होगा कि इसे प्रकाश संश्लेषण या फोटोसिंथोसिस (photosynthesis) कहते हैं। इस रासायनिक क्रिया को ऐसे लिख सकते हैं:

CO_2 + H_2O + प्रकाश ⟶ (CH_2O) + O_2
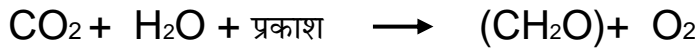
इसमें स्टार्च या पीछ या मांड बनता है, जो कि पौधों का भोजन है (हमारा भी। हम चावल, आलू, गेंहू में बहुत सारा स्टार्च खाते हैं।)

O_2 वह आक्सीजन है जो हवा में चली जाती है। CO_2 कार्बनडाइआक्साइड गैस है और H_2O पानी है।

पौधों की यह रसोई, जिसमें खाना पकता है, क्लोरोफिल (chlorophyll) नाम का पदार्थ है। यह हरे रंग का होता है और ज्यादातर पत्तों में होता है।

यह तो तुम जानते ही हो कि सभी जिन्दा प्राणी आक्सीजन से सांस लेते हैं। बिना आक्सीजन के हम एक पल भी जीवित नहीं रहेगे और मर जाएंगें। यह आक्सीजन हमारे शरीर में क्या करती है, देखो

(CH_2O) + O_2 ⟶ CO_2 + H_2O + ऊर्जा

देखो पहले वाली क्रिया का ठीक उल्टा हुआ न? स्टार्च या दूसरे काबोहाडड्रेड आक्सीजन के साथ मिलकर आखिरकार कार्बनडाइआक्साइड व पानी बनाते हैं। इस प्रक्रिया में ऊर्जा, पानी व शक्ति निकलती है जिसके कारण हम चल सकते हैं, बोल, सोच और हिलडुल सकते हैं।

पशु केवल सांस ले सकते हैं (और भोजन से शक्ति ले सकते हैं)। पौधे सांस भी लेते हैं और भोजन भी बनाते हैं। अब हम देख सकते हैं कि पौधों द्वारा भोजन बनाने की क्रिया केवल तभी हो सकती है जब सूर्य की रोशनी हो। इसलिये प्रकाश संश्लेषण केवल दिन में होता है। जबकि सांस की क्रिया को रोशनी की जरूरत नहीं। वह दिन और रात दोनों में होती है।

अब तुम देख सकते हो कि रात में पेड़ के नीचे सोने को बुजुर्ग क्यों मना करते हैं। रात भर वह कार्बनडाइआक्साइड छोड़ेंगे जो हमारे लिये अच्छी नहीं। लेकिन सभी पेड़ सांस लेते हैं। इसलिये किसी भी पेड़ के नीचे रात में सोना खतरे से खाली नहीं। इसलिये पीपल (या बरगद) के पेड़ को बदनाम करना भी ठीक नहीं। किसी पेड़ पर भूत नहीं बसते!

पहेलियों के उत्तर

5. अपराधी को शेरों वाले कमरे में जाना चाहिये। तीन साल से कुछ न खाने के कारण शेर मर चुके होंगे।
6. दोनों जगों को पानी समेत ड्रम में डाल दो।
7. कोयला।

कागज के टुकड़ों का मजा का हल

पट्टी को बीच से मोड़ी और फिर एक काट लगा दो। उसके तीन टुकड़े हो जाएंगे।

पट्टी को बीच से मोड़ो और किनारे पर खड़ा कर दो। वह आसानी से खड़ी हो जाएगी। (मैंने भी तुम्हारी तरह दीदी से कहा कि 'प्रश्न में यह तो नहीं बताया था कि हाथ से उसे मोड़ सकते हैं। तो वह बोलीं– 'यह भी नहीं बताया था कि हम नहीं मोड़ सकते।' और मेरे पास कोई जवाब नहीं था।)

पेड़ बचाओ

चित्र: नेल्टेयर एबरिन

अरविंद गुप्ता की पुस्तक 'हैन्ड्स ऑन एक्टिविटीज' से साभार
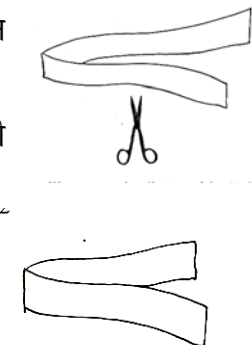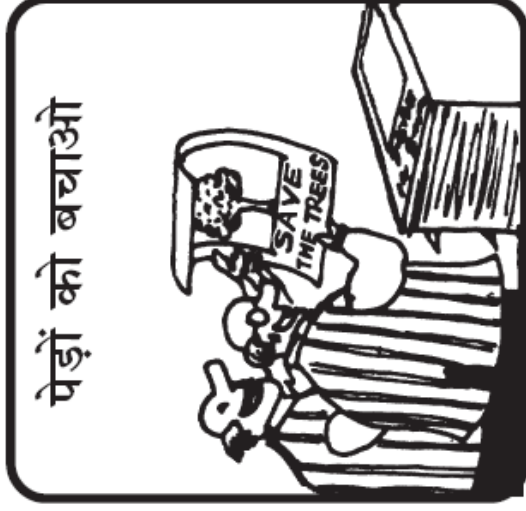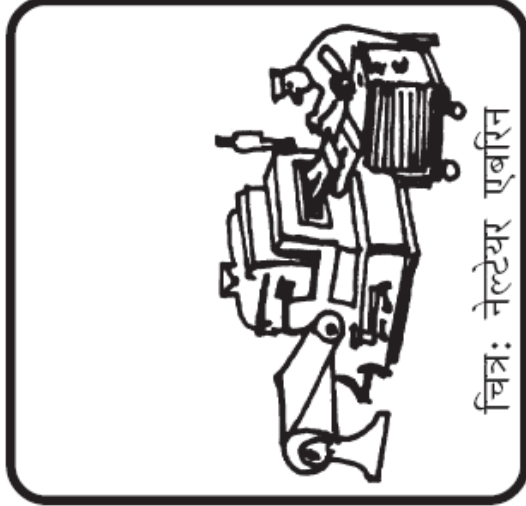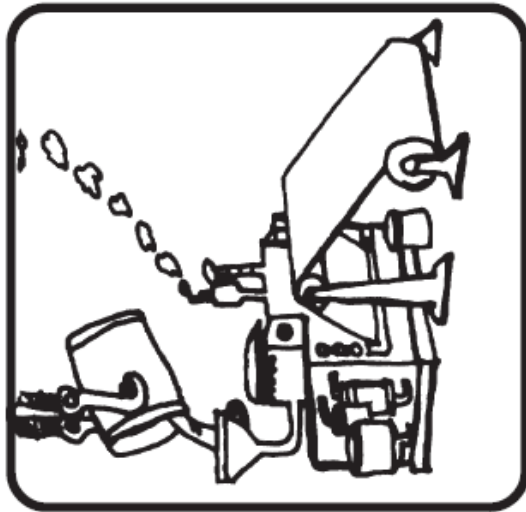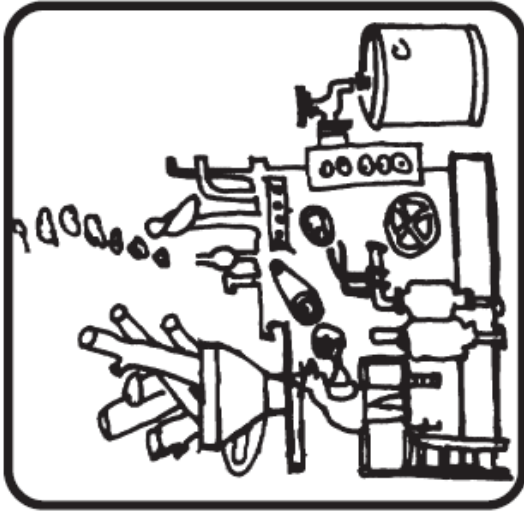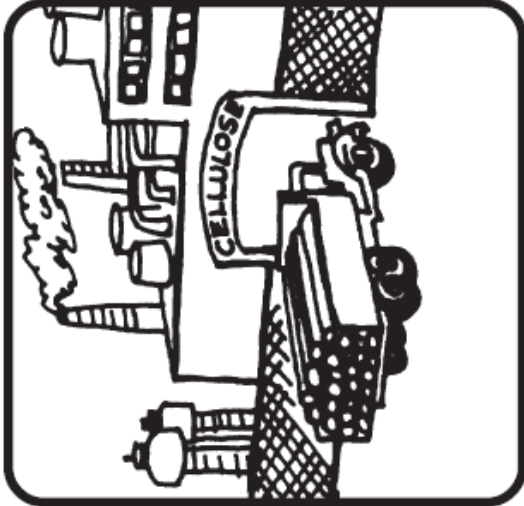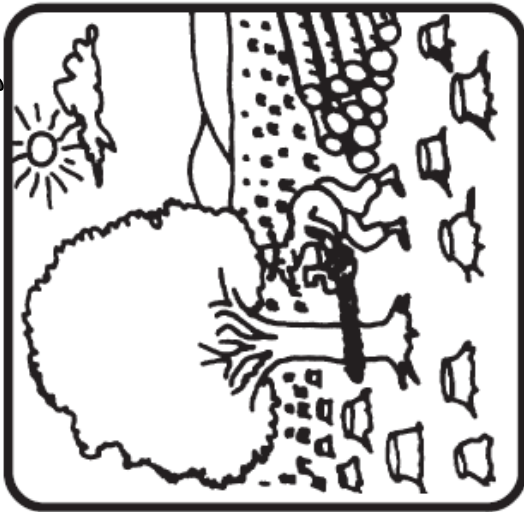
कनैडा के आदिवासी रैड इण्डियन लोगों की एक कथा, जिसे सुनाया मशहूर उपन्यासकार ऐन कैमरोन ने)

अनुवाद: पूनम सिंह

डुबडुबी की आवाज़

एक समय था जब द्वीप के सारे पंछियों से बढ़कर सुंदर डुबडुबी ही गाया करती थी। पानियों के ऊपर तैरती वह अपने दिल का सारा चाव साफ सुनहरी सुरों द्वारा न्यौछावर कर देती। डुबडुबी का इतना सुंदर गाना सुनने के लिए लोग समंदर किनारे चट्टानों और रेत पर आकर बैठ जाते। दूसरे पंछी भी पेड़ों पर आ जुटते, वनों में से जानवर आ जाते और जब डुबडुबी गा रही होती, सारे ही खुश खुश महसूस कर रहे होते। तब भी, जब
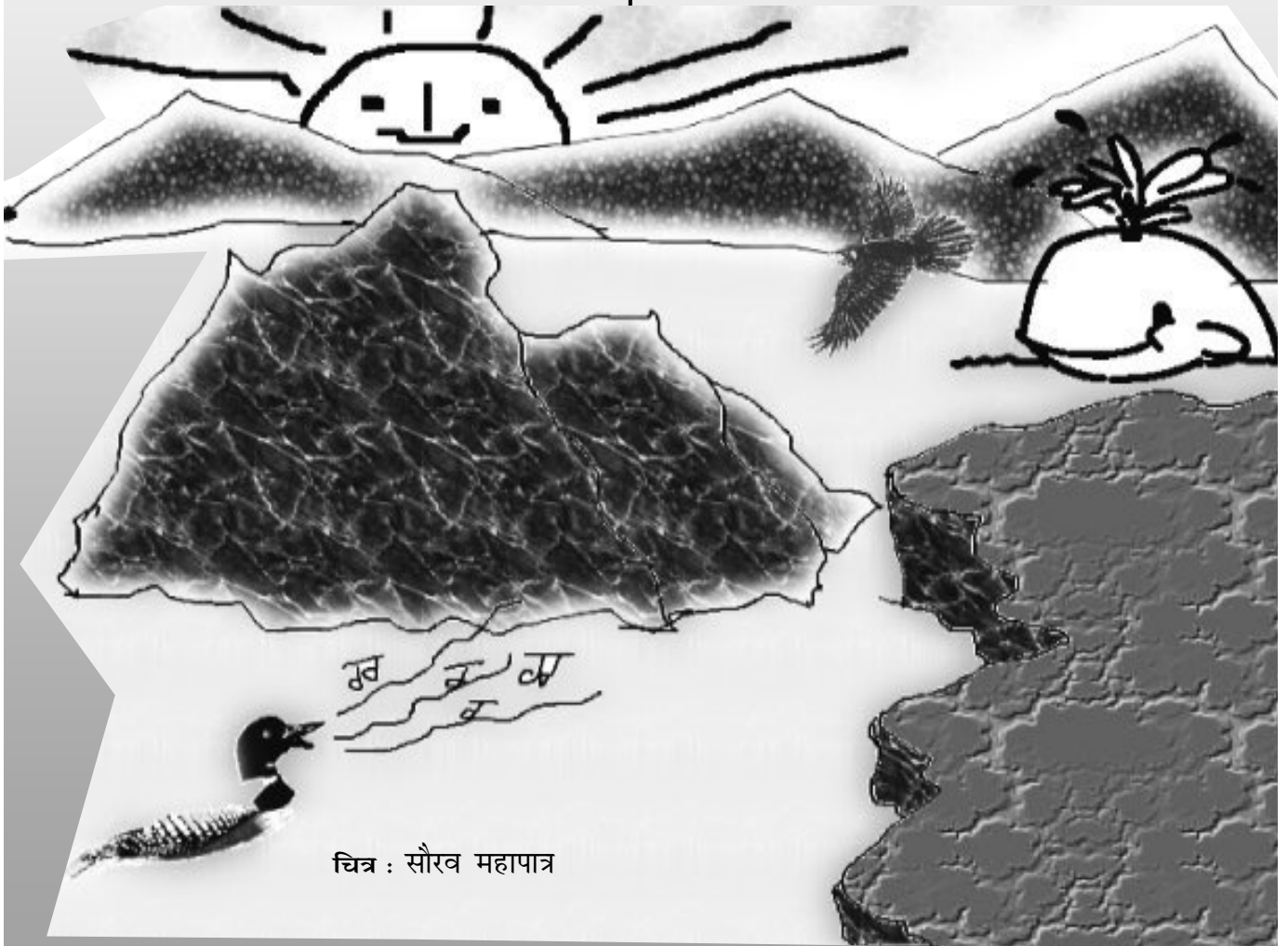
चित्र : सौरव महापात्र

बरखा बरस रही होती, और बादल सूर्य का मुँह ढके होते, डुबडुबी तो गाती। ह्वेल मछलियां जो समंदर में रहती हैं, वे भी ऊपर आ जातीं और जब डुबडुबी के गाए सुंदर गीतों की हामी भरती हुई वे हवा में उछल पड़तीं, तो उन की काया आसमान में उघड़ी दीखती।

फिर एक दिन द्वीप के साथ बहुत बुरा हुआ। बुरी आत्माएं आ घुसीं, किसी को नहीं था पता कहां से, और उन्होंने दिन का उजाला चुरा लिया।

सारी धरती के ऊपर परछाईयां फैल गई, पेड़ों के पत्ते गिर गए। फलदार झाड़ियां सूख गई, घास उगनी बंद हो गई। वन के जानवरों के लिए कुछ खाने को न रहा, न लोगों को ही।

दुनिया ठंडी होने लगी और मरने को हो गई, सारे लोग इकट्ठा होकर दुआ करने लगे। ढोल बजे, नृतक नाचे, गवइयों ने गाया और लोगों ने, जितना जादू उन्हें आता था, कर देखा।

पर दुनिया और ठंडी होती गई, परछाइयां और घनी, और लोगों ने उम्मीद छोड़ दी।

तब फिर जानवर जुट बैठे और उन्होंने दुनिया को बचा लेने की राह ढूंढने की कोशिश की।
''उन्होंने दिन की रोशनी छिपा ली है,'' पहाड़ी कांवनी बोली, ''उन्होंने दिन की रोशनी को एक बक्से में बन्द कर रखा है। ऊपर से एक मंत्र भी फूंका है। एक दीवार बर्फ की, उन्होंने अपने और उस बक्से के आसपास बनाई हुई है, जिस में दिन की रोशनी को फांसा हुआ है।''

''फिर तो हमें बक्सा ढूंढ, उसे खोल, उजाले को आजाद करने का ढंग निकालना चाहिए।'' समुंदरी बाज़नी ने कहा।
''हमें पता कहां है कि बक्सा किधर है?'' नेवले ने कहा, ''उस बर्फ की दीवार के पीछे कहीं भी तो पड़ा हो सकता है वह।''

समुंदरी बाज़नी ने सहमति से सिर हिलाया, और किसी को पता भी न चला कि वो क्या करने लगी है, जब वह ऊपर, ऊपर उड़ पड़ी, अधिक ऊंची और अधिक ऊंची जाती हुई, बर्फ की दीवार के साथ साथ, आसमान की ओर। बाज़नी खुद भी थक ही चली थी, जब वो बर्फ की दीवार के ऊपर पहुंची। ऊपर से नीचे देखते देखते, उसकी तीखी आंखें परछाइयों और अंधेरों के बीच में से ताड़ रही थीं।

आखिर दयार का एक बड़ा सा मीनाकारी वाला तराशा हुआ बक्सा उसने देख लिया, दयार से ही बनी रस्सी के साथ अच्छे से बांधकर रखा हुआ।

समंदरी बाजनी इस बक्से के ऐन ऊपर तक पहुंची और उसने अपने पंख झुकाए, पीठ को कमान किया और गोता लगाया। नीचे, नीचे, नीचे वह आती गई। लेकिन बदरूहों ने उसे देख लिया और उन्होंने समुदरी बाजनी को वापस भेजने के लिए चीखती बर्फीली हवाएं भेजीं।

समुंदरी बाज़नी ने बार बार कोशिश की, पर वह बक्से के इतनी नजदीक न पहुंच सकी कि वह उसे अपने तगड़े पंजों की जकड़

में ले सके। आखिर वह इतना थक गई कि कोशिश करना छोड़, वापस वहीं आ गई जहां सब जानवर इंतजार कर रहे थे। उसके पंख बर्फ की रंगत दे रहे थे।

''मुझे अफसोस है,'' हांफते हुए समुंदरी बाज़नी ने कहा, ''मुझे बहुत अफसोस है।''

'चलिए।' पहाड़ी कांवनी ने कहा, ''यह तो पता चला कि हम ऊपर से नहीं जा सकते।''

''मैं जा सकता हूं अंदर,'' हिरन ने भरोसे से कहा। ''बर्फ की ही तो है, कोई चट्टान की तो नहीं है दीवार! मेरे बहुत तगड़े, बड़े शाखदार सींग हैं और मेरे कंधे और मेरी टांगे भी बहुत जानदार हैं। मैं बस अपने सर से जादू की दीवार में रास्ता निकला मारूंगा, फिर तुम सब भाग कर अंदर घुस जाना, बक्सा संभाल, जल्दी जल्दी वापस बाहर आ जाना। आसान ही तो है।''

''मेरा नहीं ख्याल,'' पहाड़ी कांवनी धीरे से बोली, ''मैंने कभी नहीं देखा कि जोर या हिंसा कभी फली हो तथा कोई भी चीज़ हासिल करने की यह सही राह हो।'' लेकिन उसकी
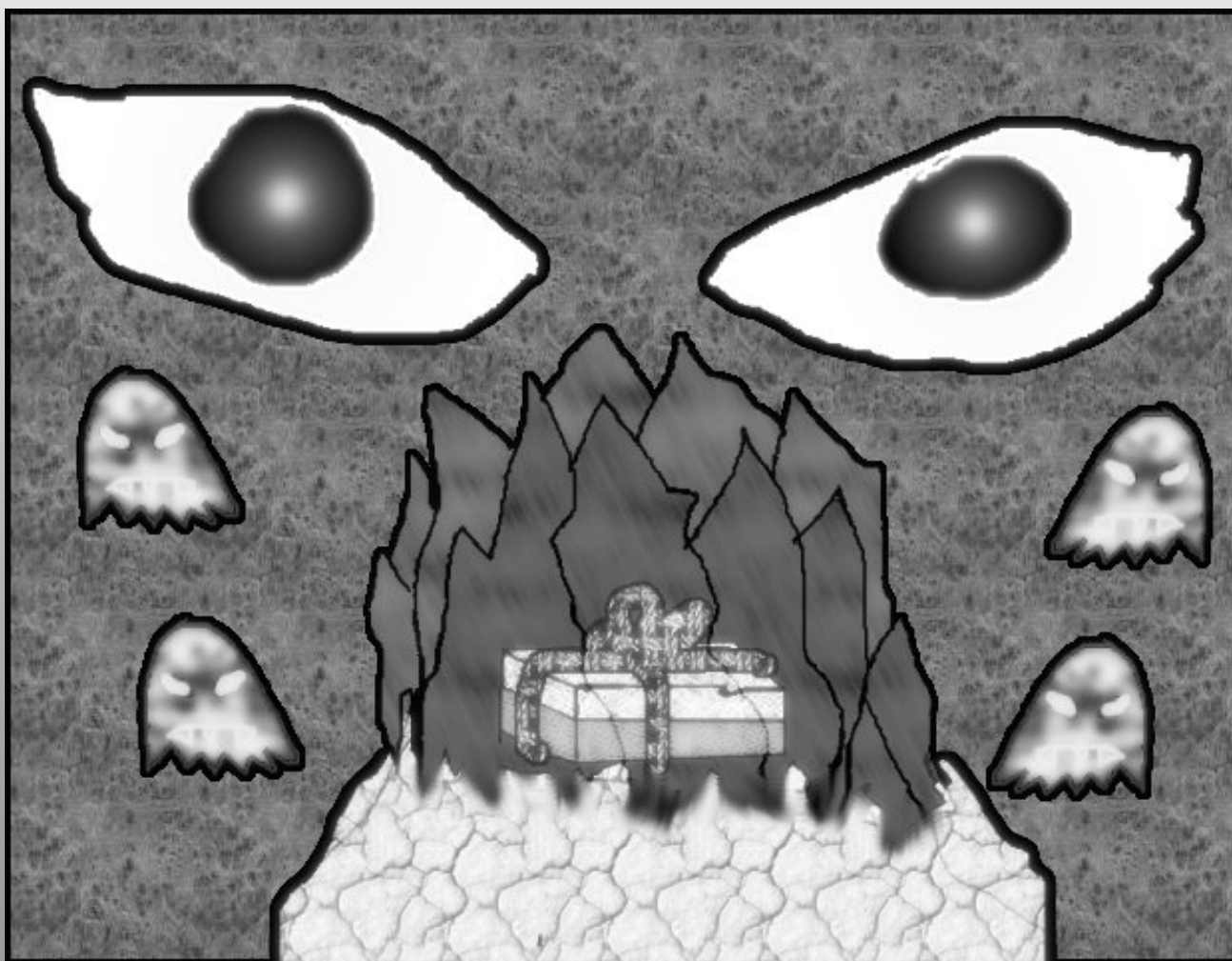
बात कोई नहीं सुन रहा था, सारे हिरन की जय जयकार कर रहे थे।

हिरन ने अपना सर झुकाया, कंधे जोड़े और हल्ले पर हल्ला बोल दिया। आखिर, उसका सर बेचारा नरम पड़ गया और न सह सका। और हिरन बीमार सा लगता, वापस साथियों में आ मिला। उसके शानदार शाखदार सींग टूट कर पूरी तरह उतर चुके थे, उसका सर खून से लथपथ था और दुखता था।

''यहां लेट जाओ,'' पहाड़ी कांवनी ने कहा, ''मैं तुम्हें तुम्हारे दुखते सर के लिए पुल्टिस दे देती हूं।''
''लो भाई,'' भालू कड़का, ''मुझे तो स्पष्ट हो गया है कि हमें दीवार को नहीं, उन बुरी आत्माओं को ही पछाड़ना है, जिन्होंने यह दीवार बनाई है। मैं चला वहां और उन्हें सीधी भिड़ने के लिए ललकारूंगा क्योंकि मुझ से अच्छा तो टक्कर लेने वाला सारे वन में क्या होगा कोई।'' ''मुझे तो शक है,'' पहाड़ी कांवनी ने कहा।
''मूर्ख !''भालू ने शेखी मारी, ''मैंने जाते ही उन्हें जा पकड़ना है, अच्छा हिलाऊंगा उन्हें, फिर उन्हें एक एक कर चित्त करूंगा और जब सब की सब हार गई, जादू की दीवार गिर पड़ेगी और सब कुछ ठीक हो जाएगा, बिल्कुल ठीक....।''

ताल ठोंकता हुआ, सीने पर थापियां मारता अपनी बैडोल सी चाल चलते वो बुरी आत्माओं की तरफ हो चला। वो पैर पटक रहा था और चट्टानें और लकड़ियां उठा उठा कर फैंक रहा था, मुंह से गालियां निकालते हुए उसने बुरी आत्माओं को ललकारा।

बुरी आत्माओं ने पलट कर भालू को देखा, पलट कर देखा एक दूसरे को, और गर्व से नाक चढ़ाकर बेफिक्री दिखाई। फिर उन में से एक ने, एक जादू की उंगली जरा सी टेढ़ी की और उधर भालू ऊंचा उठ गया, फिर जमीन पर पटका गया, उसकी लोटनियां लगाई गई, झाड़ा गया, उसकी कुटाई की गई, उसे धम्म धम्म पटका गया और उसके घूंसे जड़े गए।

जब आखिर भालू अपने मित्रों के पास वापस आया, इतना थक चुका था कि वह आते ही गहरी निद्रा में सो गया। भालू को चित्त कर दिया गया था।

''ऐसे तो नहीं चल सकता न'' डुबडुबी ने धीरे से कहा। ''यह तो है,'' पहाड़ी कांवनी ने कहा, ''लेकिन उन कानों का क्या करें जो सुनें ही न। जोर आज़माई से कभी कोई हल निकला तो नहीं।''

''मुझे कुछ सूझा है,'' डुबडुबी ने कहा, ''मैं छोटी सी हूं और मैं हूं भी बहुत काली और अंधेरा भी बहुत है। तो इस लिए मेरे दिख पड़ने का सबब नहीं बनने लगा। और तू'' डुबडुबी छछुंदर की ओर देखकर मुस्कराई, ''तेरे अगले पंजे बहुत सुंदर है, वैसे ही हैं जैसे खुदाई के लिए चाहिए होते हैं''

''हां!'' छछूंदर ने कहा, ''मेरी अच्छी किस्मत! पर तुम्हें पता है न, मुझे ज्यादा दिखता नहीं। तुम्हें मुझे वहां ले जाना पड़ेगा, जहां तुम चाहते हो कि मैं खुदाई करूं।''
और फिर डुबडुबी छछूंदर की बांह पकड़कर

शीत ओर बर्फ की उस दीवार तक ले गई, उस बक्से के आसपास बनाई गई दीवार तक, जिस बक्से में दिन की रोशनी कैद थी।

''शुक्रिया,''छछूंदर बुदबुदाई। फिर उसने अपना सर झुकाया और बर्फ हुई धरती में अपने बड़े बड़े अगले पंजों से खोदने लगी, धीरे धीरे हठ के साथ और बड़ी चुपचाप।

जब छेद कुछ इतना बड़ा हो गया कि छुटकी सी डुबडुबी दीवार के नीचे से फिसल सके, तो डुबडुबी बड़ा ध्यान रखती हुई, सरकती, उस जगह को पहुंची जो समुंदरी बाज़नी ने बताई थी।

डुबडुबी के लिए चुपचाप चलना मुश्किल था, उसके पांव तो पानी में छप छप करने के लिए बने थे, जमीन पर चलने के लिए तो नहीं। उसका शरीर पानी की तह पर तैरते रहने और उड़ने के लिए बना था, ऊंची नीची जमीन पर चलने के लिए नहीं, लेकिन डुबडुबी ने यह सब संभाल लिया।

जब वह दयार के बक्से के पास पहुंची, अपनी चोंच से उसने दयार की रस्सियों की गांठें खोल दी, बक्से का ढक्कन उठा फैंका और दिन की रोशनी की ओर बढ़ी।

अब डुबडुबी की एक सफेद कंठी होती है और जब इस पर दिन की रौशनी चमकी, तब बदरूहों की उस पर नजर पड़ गई। उन्होंने उसको गर्दन से पकड़ कई चक्कर दिए और पूरा घुमा कर बर्फ और शीत की दीवार के ऊपर से वापस फैंक मारा।

बेचारी छुटकी डुबडुबी, बेचारी बहादुर छुटकी डुबडुबी! जोर से फैंकी गई ऊपर, ऊपर, ऊपर-जितना ऊपर वह कभी नहीं गई थी, उस से भी ऊपर, और फिर आधी होश में और आधी जीवित, वह नीचे गिरती आई, नीचे, नीचे और जमीन पर आ ढेर हुई, गर्दन उसकी इतनी खिंची हुई कि उसके दोस्तों ने उसे मुश्किल से ही पहचाना। जब उसने गाने की कोशिश की तो केवल एक उदास आवाज ही उसकी तबाह हुई वाणी-नली से निकली।

''यह तो बहुत ही बुरा हुआ है!'' पहाड़ी कांवनी फट पड़ी, ''यह तो बहुत ही बुरा हुआ है।''

पहाड़ी कांवनी को अधिक दुख नहीं हुआ था जब हिरन के सींग चले गए थे। वह तो बिल्कुल भी दुखी नहीं हुई थी, बल्कि उसे तो हंसी ही आई थी, जब भालू पहलवानी में हार गया था। लेकिन, एक छोटी सी काली परवेरू के साथ इतना बुरा बर्ताव करना तो और ही बात थी बिल्कुल ।

''यह!'' पहाड़ी कांवनी ने कहा, ''बर्दाश्त नहीं किया जा सकता!'' और पहाड़ी कांवनी चल पड़ी उधर को जहां बेचारी छछूंदर इंतजार
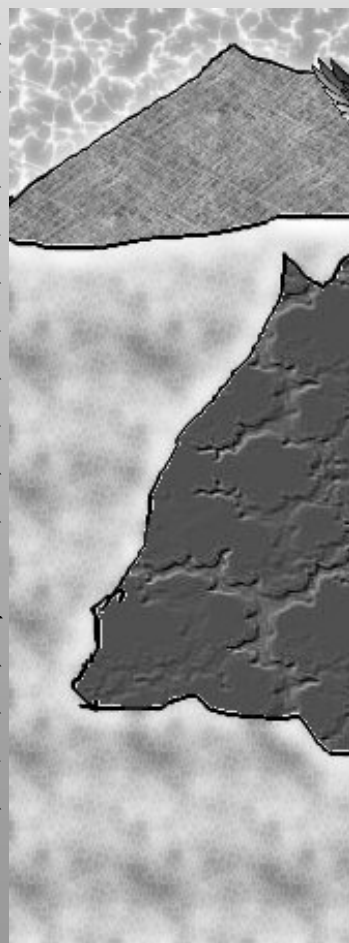
कर रही थी उस छेद के पास जो उसने खोदा था। वह फुदकती उछलती छेद तक पहुंची, आसानी से फिसलती हुई निकल गई बीच में से, और झट से जा पहुंची वहां, जहां अधखुले बक्से में पड़ा था, दिन का उजाला।

पहाड़ी कांवनी ने अपना बड़ा सा पंख बक्से के ऊपर कर दिया और रोशनी की वह धीमी सी झलक, जिसने डुबडुबी का भेद खोल दिया था, छिप गई। पूरे अंधेरे में काम करते, पहाड़ी कांवनी ने बक्से में से दिन का उजाला उठा लिया और अपने पंखों के नीचे छिपा लिया। और क्योंकि पहाड़ी कांवनी काली होती है पूरी, उसके पांव, उसकी चोंच भी, उसकी आंखें भी, अंधेरे में कुछ था ही नहीं दिखने को, और बर्फ की दीवार के नीचे के छेद तक भाग आने में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई। ''चलो भई, '' पहाड़ी कांवनी ने कहा, छछूंदर को बांह से पकड़ते। ''शुक्रिया,'' छछूंदर मुस्कुराई, खुशी-खुशी पहाड़ी कांवनी के पीछे-पीछे शीत से दूर आती हुई।

जब वे वहां आ पहुंची जहां उनके मित्र इन्तजार कर रहे थे, पहाड़ी कांवनी ने अपने पंख पूरे चौड़े खोल दिए और............ पहाड़ी कांवनी दिन का उजाला छुड़ा लाई थी!
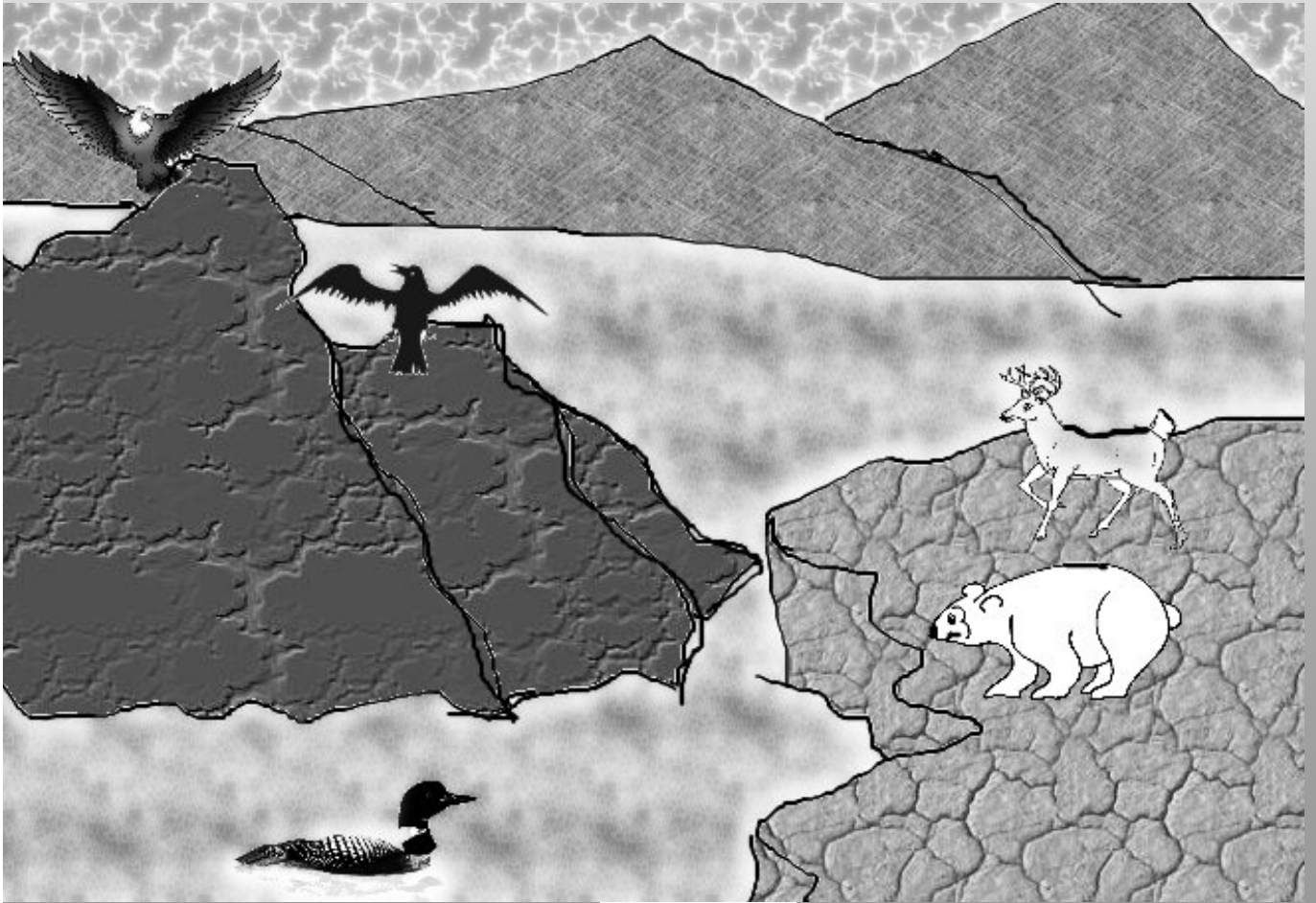
बरफ की दीवार पिघलने लगी। सूनी टहनियों पर जो बर्फ की बनावटें जमी हुई लटक रही थीं, उनसे तुपके तुपकने लगे और वे सिकुड़ने लगीं। दिन के उजाले ने जमी हुई धरती के अंदर पड़े इन्तजार कर रहे बीजों को गर्मी दी और वे अंकुरित होने लगे और बढ़ने लगे, टहनियों पर पत्ते फूट आए, और सारी ही सृष्टि ने गरमाइश और उजाले की वापिसी का जश्न मनाया।

''हाय!'' छछूंदर चीख कर बोली, ''मुझे अपनी चमड़ी पर गरमाइश महसूस हो रही है। मैं बड़ी अभारी हूं। शुक्रिया आप सब का, बहुत-बहुत शुक्रिया!''

''तुम्हारे बिना हम यह न कर पाते बहादुर छछूंदर,'' समुंदरी बाज़नी ने कहा और वह खुशी से नाचने गाने के लिए नीले आसमान में उड़ान भर गई।''

''गा री प्यारी डुबडुबी,'' छछूंदर ने मांग की ''कृपया हम सब के लिए खुशी का एक गीत गा दो।'' लेकिन जब डुबडुबी ने गाने के लिए मुंह खोला अपना, तभी समझ पड़ी सब को, कि दिन के उजाले को छुड़वाने की कोशिश के लिए उसे कितनी भयानक कीमत देनी पड़ी थी। आवाज की जगह जो निकली, वो बस एक उदास, अकेलेपन की मारी हुई पुकार थी। जिन्होंने भी यह सुनी, सबको उसकी याद हो आई जो कभी उनके पास हुआ करता थी, लेकिन अब खो चुकी थी।
''ओह,'' छछूंदर ने कहा, और एक आंसू उसके चेहरे पर नीचे फिसल गया।
''रो न छछूंदर'' डुबडुबी ने कहा, ''मेरी गाने वाली आवाज भले ही चली गई हो, लेकिन इस गर्माइश भरी धूप और इन खूबसूरत महकते फूलों के वापिस लाने के लिए यह कोई बुरा सौदा नहीं रहा। मुझे कोई गिला नहीं है।''
जब डुबडुबी ने यह शब्द कहे, उसकी आवज में उदासी थी और सफेद कंठी वाली उसकी गर्दन के पीछे उसके गले मे जैसे कुछ अटका था। ''मुझे बिल्कुल कोई गिला नहीं। हम कोई बुरे नहीं रहे।''

दिन की रोशनी को छुड़ाने के अपने महान संघर्ष के कारण सारे ही जानवर बदले बदले थे और आज दिन तक हर पतझड़ की ऋतु हिरन के सींग गिर जाते हैं, भालू अपनी मेहनतों की थकान उतारने के लिए कई कई महीनों के लिए सो जाता है और पहाड़ी कव्वों को चमकती दमकती चीजों के साथ मोह है।

और आज दिन तक, हर शाम, जब सूर्य डूबने लगता है और रात का अंधेरा शुरू, डुबडुबी को वह समय याद आ जाता है जब उसकी गाने वाली आवाज़ गुम हो गई थी, और उसकी उदास पुकार, पानियों के ऊपर तैरती, गूंजती चली जाती है।

हमारी दुनिया में कोयला और पेट्रोलियम अब जल्दी ही खत्म हो जाएंगे और बहुत समय से यह चिंता जारी है कि फिर हम ऊर्जा कहां से लाएंगे? लेकिन ऊर्जा का एक धधकता हुआ स्रोत ठीक हमारे पैरों के नीचे है- पृथ्वी के अन्दर का तपता हुआ कोर (core)। हम जानते हैं कि धरती की ऊपरी पपड़ी के ठीक नीचे पिघला हुआ मैग्मा है- तपती लाल पिघली चट्टानें जो हर बार फटते ज्वालामुखियों से लावा के रूप में बाहर उफनती हैं। संसार के बहुत से इलाकों में ज्वालामुखियों की यह गर्मी उबलते पानी या भाप के रूप में बाहर आती है। इसे फिर बिजली बनाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। इटली में करीब सौ साल पहले एक ऐसा पावर स्टेशन बना दिया गया था जो पृथ्वी के अंदर की गर्मी से चलता था। परन्तु यह थोड़ी ही बिजली बनाता था। आज संसार में कई जगह पृथ्वी के अंदर की गर्मी को इस्तेमाल करके बिजली बनाने की कोशिशें चल रही हैं।

धरती का धधकता दिल
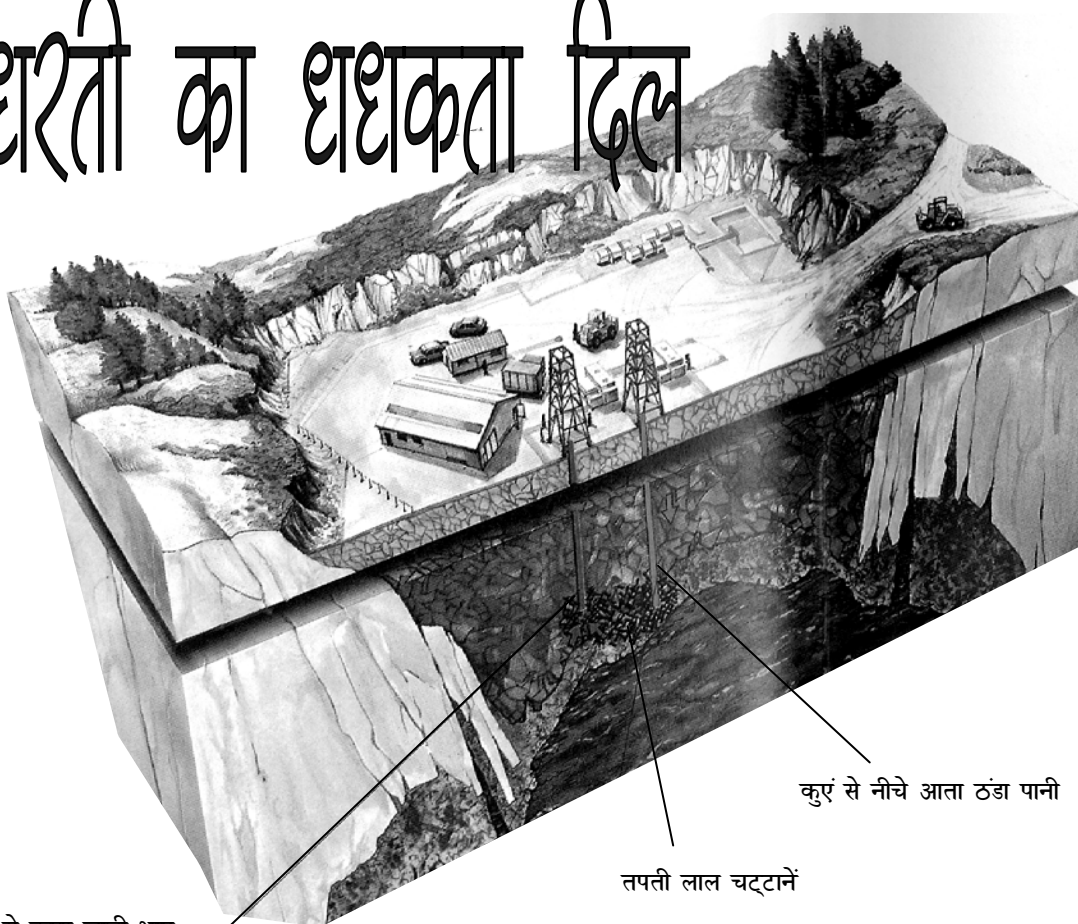
गर्मी के लिये खुदाईः न्यू मेक्सिको के रेगिस्तान में धरती के सीने में दो गहरे छेद किये गए हैं। सबसे गहरे कुएं 4,400 मीटर गहरे जाते हैं जहां चट्टानों का तापमान 3270C है। जब एक कुएं से पानी तेज दबाव में नीचे पम्प किया जाता है तो वह नीचे की गरम चट्टानों को चिटका कर बहुत से छेद बना देता है। साथ ही यह पानी भाप बनकर छेदों के जरिये दूसरे कुएं तक पहुंच जाता है जहां से उसे ऊपर पंप किया जाता है। इस भाप से बड़े स्तर पर बिजली बनाई जाती है जिससे पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं होता। (क्या तुम जानते हो कि नदियों पर बड़े बांध बनाकर उनसे बिजली बनाने की एक बड़ी कीमत पर्यावरण को चुकानी पड़ती है?)

दुनिया के बहुत से हिस्सों में (जैसे आइसलैंड, इटली और जापान में, धरती के नीचे की गर्मी स्वयं ऊपर आती है। बारिश का पानी चट्टानों के नीचे रिस कर ऐसी जगह पहुंच जाता है जहां धधकता मैग्मा उसे गर्म कर देता है। अब यह गर्म पानी चट्टानों के छेदों के ज़रिये वापस ऊपरी सतह तक पहुंचता है–गर्म पानी के चश्मों, झीलों, भाप के या गर्म पानी के फव्वारों के रूप में लोग अक्सर इस गर्म पानी या भाप का फायदा उठाते हैं। आइसलैंड में 80 प्रतिशत से ज्यादा घरों को यह कुदरती गर्म पानी पाइपों से भेजा जाता है जो घरों को गर्म रखता है। हिमाचल में तत्तापानी और मणिकर्ण में यह उबलता पानी गर्म पानी के चश्मों/ झीलों के रूप में देखा जा सकता है। मणिकर्ण में लोग चावल की पोटलियां इस खौलते पानी में डालकर पका लेते हैं उनका कोई खर्च इंधन का नहीं लगता। मनाली में वशिष्ठ में लोग इस गर्म पानी में नहाने के मजे लूटते हैं।
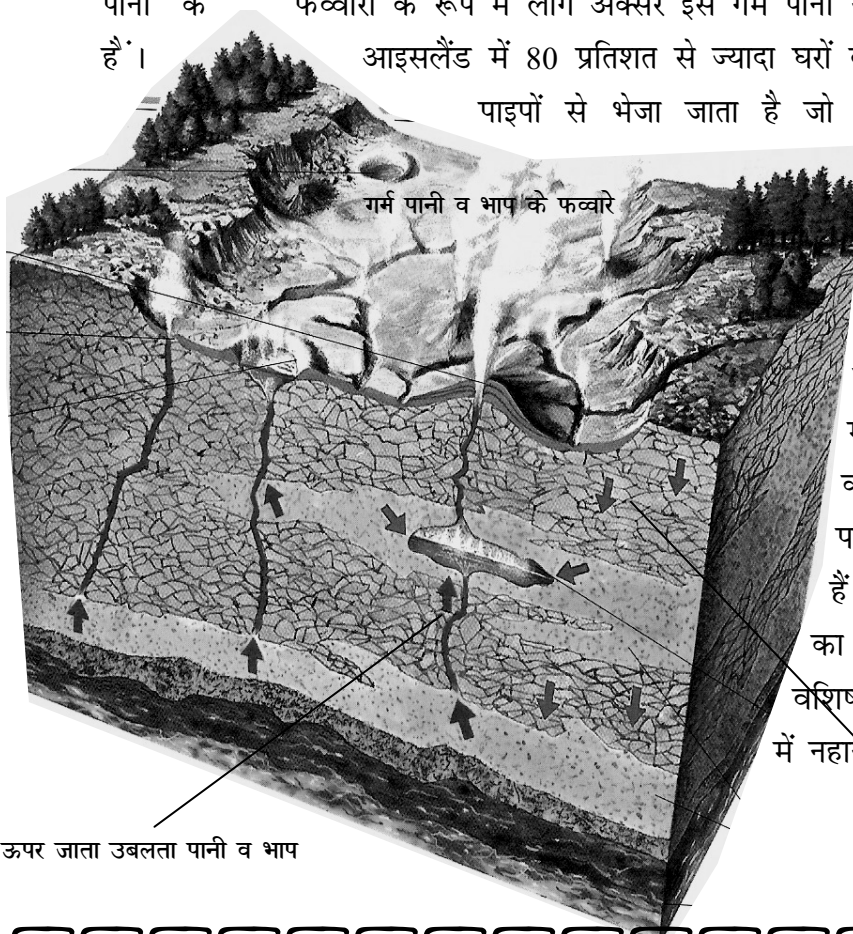
तुर्की के एक इलाके में बहुत पुराने समय में ढेरों लावा और राख एक नर्म चट्टान, टूफा के रूप में जम गया। लाखों बरसों में बारिश, हवा और रेत से घिस-घिस कर टूफा के अजीबोगरीब तिकोने रंगबिरंगे टीले बन गए। चौथी शताब्दी से लोगों ने इनमें खोदकर गुफाओं जैसे घर बनाए हैं। इनमें से कुछ को बहुत खूबसूरत नक्काशी वाले गिररिजाघरों में भी बदला गया है।
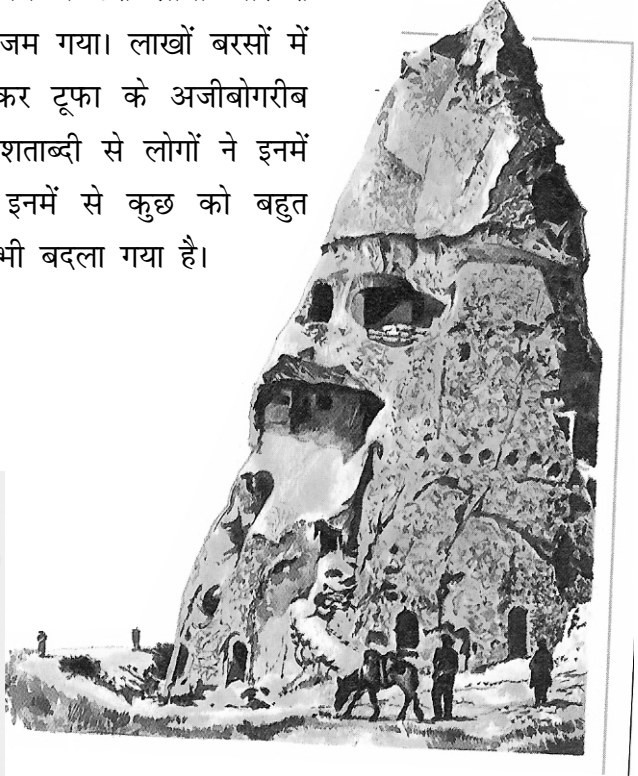
आर्कटिक के नजदीक बर्फीले आइसलैंड में रहने वाला यह किसान गर्मियों के फल सब्जियां उगा रहा है। कैसे? यह धरती के गर्भ से आए गर्म पानी के चशमों से अपने ग्रीन हाउस को गर्म करता है।

साओ मिगुएल, अज़ोरस, में द्वीप वासी गर्म धरती में बने छेदों में मीट और सब्जियां डाल कर पकाते हैं। खाने को धातु के डिब्बों में बंद करना पड़ता है ताकि वह गंधक (Sulphur) की महक से खराब न हो जाए।

अरे रे कौवी! तेरी पूंछ कहां गई ?
तू ठहरा भोंदू, तू क्या समझेगा ? आजकल कतरी हुई पूछों का फैशन है।
काकपुराण
हे ईश्वर, यह पट्टी इसे किसने पढ़ाई ?
ओह अब समझा!
लोग मुझे अब कितना 'मॉडर्न' समझेंग
ये तोता इधर क्यों तेजी से आ रहा है ?
ओह,ओह, मेरी रोटी ! मैं कटी पूंछ के मारे उड़ भी नहीं सकती ।

देखा, नकल करने का परिणाम?
हुंह, तो क्या हुआ? कम से कम मैं फैशनेबल तो हूं!!

अरी कैसा फैशन? वह तो कब का पुराना हो गया। अब तो बड़ी-बड़ी पूंछे लहराने का फैशन है!

हाय, हाय, हाय!
हा हा हा!
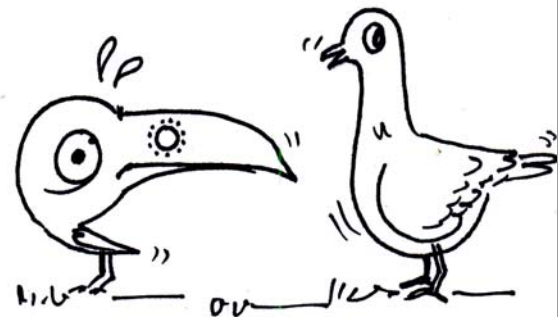
कैसा फैशन, कैसा मुलम्मा
कर दिया इसने बुद्धि को निकम्मा
जेब को लगी चपत करारी
सूरत रोज बिगाड़ें नर-नारी!!
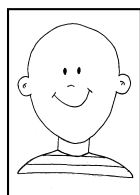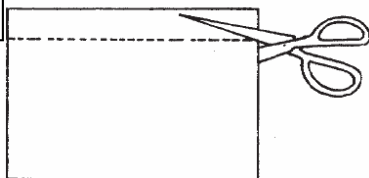
कागज की मछली

1 अखबार के कागज की 2-सेमी चौड़ी और 12-सेमी लंबी पट्टी काटें।
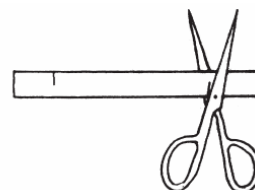
2 दोनों सिरों से 1-सेमी छोड़ कर पट्टी को चित्र में दिखाये तरीके से आधी दूरी तक काटें।
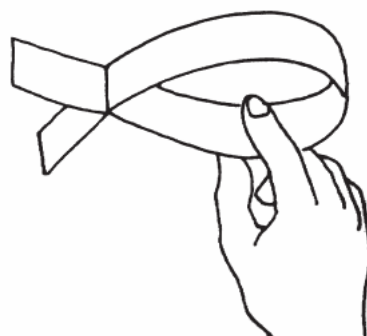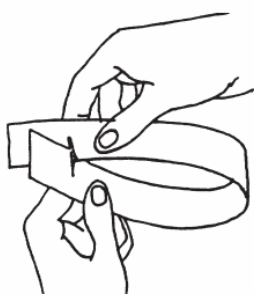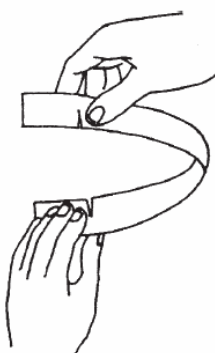
3 दोनों कटे हिस्सों को आपस में फंसायें।

4 कागज की मछली अब उड़ने को तैयार है।

5 मछली को हवा में छोड़ने पर वो गोल गोल चक्कर लगाती, घूमती और मंडराती हुई नीचे को आयेगी।

6 अलग-अलग आकार और नाप की मछलियां बनायें। हल्के और भारी कागज से भी प्रयोग करें।

सुखी या दुखी
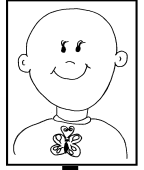
1 कागज पर एक सामान्य चेहरा बनायें। चेहरा कैसा भी हो सकता है। परंतु उसका मुंह एक लेटी रेखा हो।
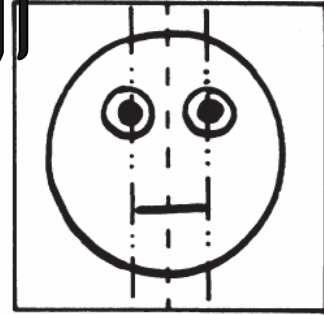
2 मुंह की रेखा के दोनों सिरों की सीध में दो खड़े मोड़ बनायें। बीच में एक 'खाई मोड़ें।
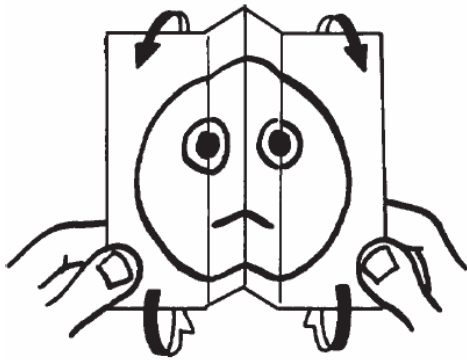
3 अब कागज के दोनों निचले कोने पकड़ कर उपर वाले सिरे को अपनी ओर मोड़ें।
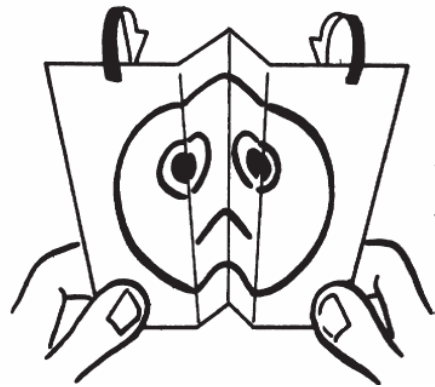
4 कागज का चेहरा काफी दुखी और उदास नजर आयेगा।

5 फिर नीचे वाले सिरे को खोलें। अब आपको एक हंसता हुआ चेहरा दिखेगा।
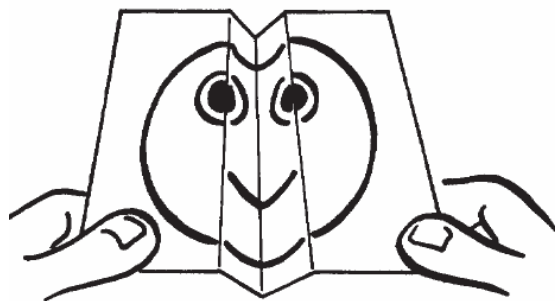
अरविंद गुप्ता की पुस्तक ''हेण्ड्स ऑन एक्टिविटीज़ से साभार''

मिथिला पेंटिंग

आइये मिथिला पेंटिंग सीखते हैं

पिछले अंक में आपने अपने परिवेश पर आधारित मिथिला शैली में चित्र बनाना सीखा। आपने देखा / सीखा होगा कि इन चित्रों में बनाये गये पशु-पक्षियों, मानवाकृतियों और घर आदि में बाहर की रेखाएं दोहरी होती हैं तथा इनके भीतरी भाग में फूल-पत्तियां और महीन रेखाओं से भर दिये जाते हैं।

इस शैली के चित्रों में महिला के लिए लहंगा-चुनरी तथा पुरुष के लिए धोती-कमीज प्रधान होता है। चित्रों में भाव-भंगिमा आंगिक (अंग संचालन) पर निर्भर करता है।

आइये हम लोग बनाये गये चित्रों में कपड़ों के उपर प्रिंट के लिए कुछ चिह्न तथा किनारी का अभ्यास करते हैं।

1. अभ्यास के लिए पहले कई चौकोर / गोल खाना बना लें तथा उसके भीतर अलग-अलग चिह्नों को भरें।
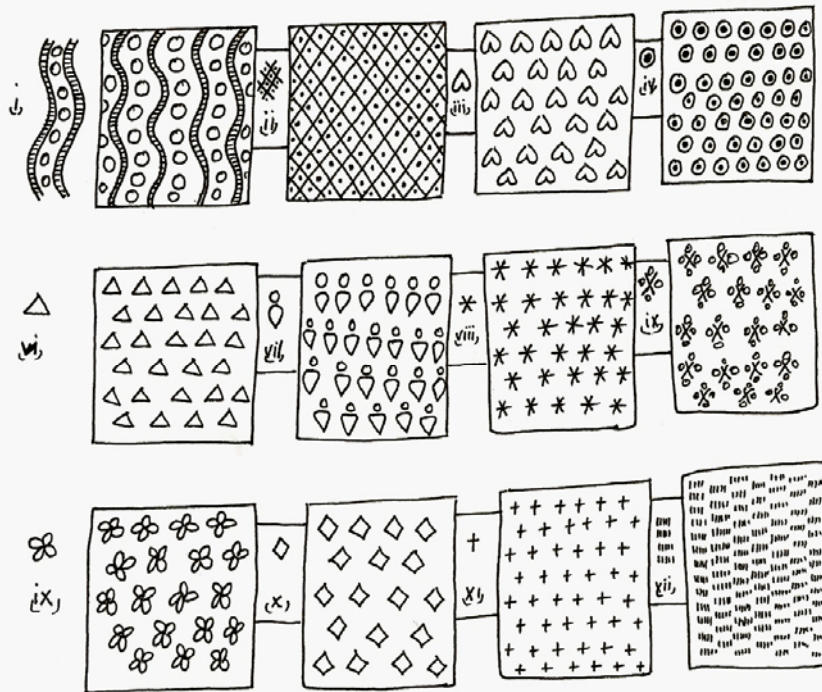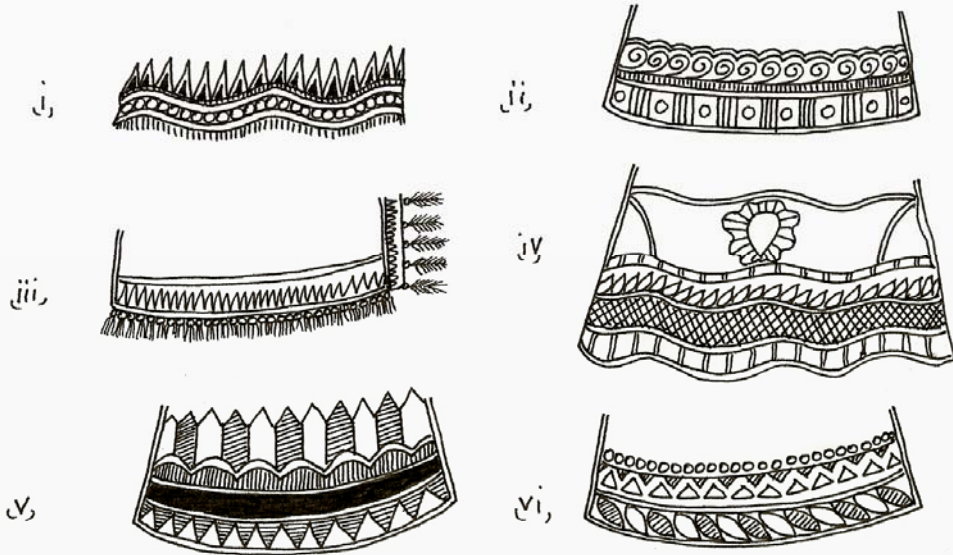
२. कपड़ों में किनारी के लिए
i,
ii,
iii,
iv
v,
vi,
इसे पूरा करें
– सीताराम

शेर
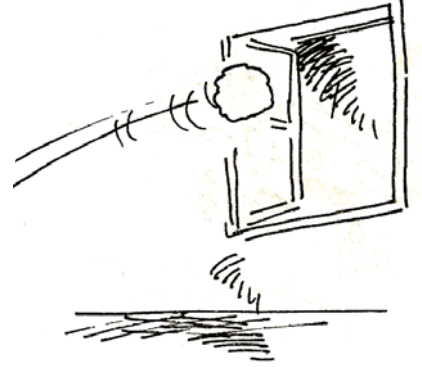
होल्गर पुक्क

मैदान में हिमगोला -फेंक खेल जोरों पर था। बर्फ के गोले सनसनाते हुए मार कर रहे थे। वीनू एक जांबाज खिलाड़ी था। वह कभी घुटने नहीं टेकता, कभी मैदान नहीं छोड़ता। उस पर हर तरफ से बौछार हो रही थी, परन्तु वह वीनू को रोक नहीं पाता था। ऐसे समय वह निडर होकर आगे बढ़ता।

तभी किसी ने खिड़की खोली और एक तेज आवाज आयी, ''देखना कहीं खिड़कियों के शीशे मत चूर कर देना!''

एकदम खामोशी छा गयी। हर कोई उस व्यक्ति को जानता था। वह एक कलाकार था, एक व्यंग-चित्रकार। उसके व्यंग-चित्र आपको हंसाते पर वह आदमी खुद बहुत गम्भीर , लगभग मनहूस-सा था। उसके लम्बे बाल और घनी दाढ़ी उसे भयंकर बना देते। एक सचमुच के शेर जैसा। और लड़के वाकई उसे शेर कह कर बुलाते थे।

शेर वहां से हट चुका था लेकिन खिड़की खुली छोड़ दी गई थी। ''शेर ने अपनी मांद से बाहर झांका,'' वीनू ने खिल्ली उड़ायी और अपने दुश्मनों पर गोला दागने लगा जिन्होंने पलटकर वैसा ही जवाब दिया। और वह भीषण युद्ध चलता रहा। अचानक एक बड़ा-सा गोला उड़कर कलाकार की खिड़की से भीतर चला गया। वह वीनू का हिमगोला था। बहादुर होने के अलावा, वह ताकतवर भी था।

खेल बन्द हो गया। लड़के भयभीत थे। अब क्या होगा?

शेर का कमरा चित्रों से भरा हुआ है। वे मेज पर, कुर्सियों पर और यहां तक कि फर्श पर पड़े रहते थे। लड़कों को यह पता था। उसकी खिड़की के भीतर वे कई बार ताक-झांक कर चुके थे। लेकिन बर्फ का गोला जल्दी ही पिघलना

शुरू कर देगा.... वह कहीं भी गिरा हो सकता है। वह तस्वीरों को नुकसान पहुंचा सकता है। रंगों को धुंधला कर सकता है।

योद्धाओं ने वीनू की तरफ देखा। पर वीनू ने कहा, ''अरे हटाअओ भी! चलो भाग चलें!'' और वह जान छुड़ाकर नौ-दो ग्यारह हो गया। लड़के निर्णय की स्थिति में थे। क्या वे भी भाग खड़े हो? बर्फ का गोला तो अब तक पिघलने भी लगा होगा....

अचानक पिन्टू घूमा और लड़कों के बगल से निकलता हुआ मकान की तरफ दौड़ पड़ा । ट्रींग-ट्रींग ! उसने घबड़ाहट के साथ शेर के दरवाजे की घंटी बजायी।
''क्या बात है?'' चित्रकार ने दरवाजा खोलते हुए पूछा।
''आप के स्टूडियो में एक हिमगोला आ गिरा है।''
''तो यह बात है!'' चित्रकार ने रूखाई से कहा। पिन्टू का दिल बैठ गया। ''अन्दर आ जाओ!''पिन्टू का कलेजा और भी दहल गया। वे स्टूडियों के भीतर आ गये।

बर्फ का गोला फर्श पर पिघलने लगा था। पर सौभाग्य से उसके आस-पास कोई तस्वीर नहीं थी। चित्रकार ने हिमगोले के बचे-खुचे हिस्से को समेटा और बाहर अहाते में फेंक दिया। तब अपनी घनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कुछ सोचता-सा वह पिन्टू की ओर टकटकी बांध कर देखने लगा।

''यहां बैठ जाओ,'' उसने कुर्सी की ओर इशारा किया।
लड़का बिल्कुल डर गया। ''अब मुझे डांट पड़ेगी। डांट तो मुझ पर बस पड़ने ही वाली है'' उसने सोचा।

परन्तु चित्रकार ने एक बड़ा-सा कागज लिया और चित्र बनाने बैठ गया। उसने

पिन्टू की तरफ देखा और खासे समय तक चित्र बनाना जारी रखा। तब अपने उस चित्र को उसने लपेटा और पिन्टू की ओर बढ़ा दिया।

''यह तुम्हारे लिये। अच्छा अब घर चल दो!''
पिन्टू बिजली की कौंध की तरह अहाते में जा पहुंचा।
सभी योद्धाओं ने सारस की तरह अपनी गर्दन उचकायी।
चित्र में एक गुफा थी। गुफा में बहुत बड़ा शेर और पिद्दी सा लड़का आमने-सामने खड़े थे लड़का काफी हद तक पिन्टू से मिलता-जुलता लग रहा था। और शेर ने पिन्टू से हाथ मिलाने के लिए अपना पंजा आगे बढ़ा रखा था। नीचे लिखा हुआ था।
''शेरों की आपस की बात।''

अनुराग ट्रस्ट से धन्यबाद सहित
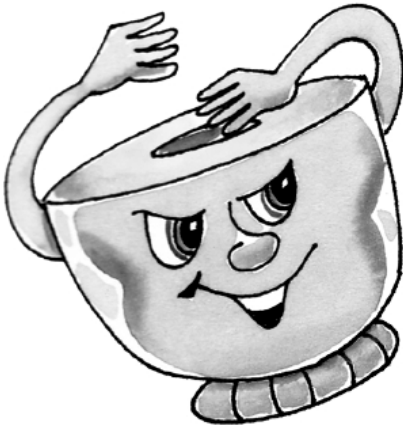
पाठकों से

इस अंक के साथ इन्द्रधनुष को चालू हुए एक वर्ष पूरा होने जा रहा है। जिन पाठकों ने शुरूआत से सदस्यता ली है, उनकी सदस्यता इस अंक के साथ खत्म हो जायेगी। पाठकों से अनुरोध है कि सदस्यता के नवीनीकरण के लिये 100/-रुपए (संस्थाओं के लिये 120/- रुपए) मनीऑर्डर या ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेजें :

इन्द्रधनुष,
हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
जिला परिषद भवन,
जेल रोड, मंडी, हि0 प्र0-175001
फोन: 01905-221575, 9418073190

तोते आदमी की तरह बात कैसे करते हैं?

तोते के मुंह में बड़ी सी और मोटी जीभी होती है। यह बिल्कुल इंसान की जीभ की तरह नहीं होती, फिर भी यह उसे बोलने में मदद करती है। तोता एक चतुर पक्षी है और जो ध्वनियां वह सुनता है, उनकी नकल कर सकता है।

मैना टेलीफोन की घंटी जैसी आवाज निकाल सकती है।

कुत्तों की लम्बी पतली जीभें होती हैं। क्योंकि उनकी जीभ में मोटाई नहीं होती, वे तोतों की तरह बोल नहीं सकते।

कोलाघ या काला कौआ
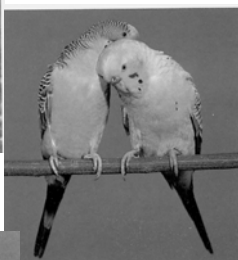
लवबर्ड या बजरीगर

पहाड़ी मैना

क्या और पक्षी भी इन्सानों की तरह बोल सकते हैं? हां- काला कौआ या कोलाघ, पहाड़ी मैना, लवबर्ड या बजरीगर जैसे पक्षी आवाजों की नकल कर सकते हैं। हालांकि जो कुछ वे बोल रहे हैं उसके अर्थ से उन्हें कोई वास्ता नहीं होता। वे सिर्फ नकल करते हैं। वे केवल इंसानों की ही नहीं, जंगल में दूसरे पक्षियों की आवाजों की भी नकल उतारते हैं।

बस्ते का बोझ

मेरे इस भारी बस्ते को
कर दे कोई कम
बारह कापी, आठ किताबें
इसमें भरता हूं
फिर खाने का अपना डिब्बा
इसमें धरता हूं
वजन बढाता कलर बक्स भी
खडिया, स्लेट, कलम
मेरा एक बोझ बन जाता
विद्या का बस्ता
गिर गिर पडता, किसी तरह से
कटता है रस्ता
छिल छिल जाता कंधा, लगता
अब निकलेगा दम
इस बस्ते से पीठ झुक गई।
टेढी कमर हुई
सब कहते हैं, बच्चे होते
कोमल, छुई-मुई
देख दशा माता सरस्वती
की आंखें हैं नम
इधर ज्ञान है एक बोझ सा
उधर फूल फूले
रटो सभी इतिहास, उधर
तितली झूला झूलें
महके महुवा, कोयल गाए
मोर करें छम छम
खेलकूद कम हुआ हमारा
केवल पढना है
यह बनना है, वह बनना है
आगे बढना है।
कविता गई, कहानी छूटी
गीत गए, सरगम
खेलें, पढें, हंसें, मुस्काएं
नाचें फूलों से
घूमें, झूमें, करें काम कुछ
सीखें भूलों से
छीन रहा है खुशियां बस्ता
बढा रहा है गम।
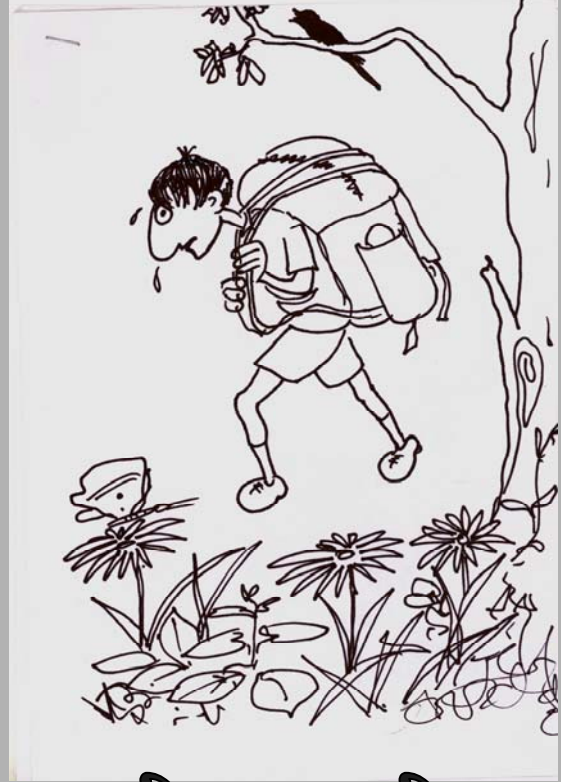
डा0 श्रीप्रसाद, ब्रजभूमि, एन 9/87 डी77
जानकीनगर, बजरडीहा, बाराणसी - 221109

प्रेम प्रदर्शन का तरीका

महान लेखक जार्ज बर्नार्ड शा बहुत सौंदर्यप्रेमी थे। उनका मानना था कि जीवन के लिए साहित्य और सौंदर्य आवश्यक तत्व है।

एक दिन एक आगंतुक ने उनसे कहा, 'आप अत्यंत सौंदर्यप्रेमी हैं, पर आपके कमरे में एक भी फूल नहीं है।'

'आप ठीक फरमाते हैं। यों, मुझे बच्चे भी बहुत पसंद हैं, पर बच्चों के प्रति प्रेम दर्शाने का यह तरीका तो नहीं कि मैं उनके सिर काटकर किसी बर्तन में सजाकर अपने कमरे में रख लूं।'

परिभाषा

अंग्रेजी का पहला शब्दकोश बनाने वाले डा0 जानसन ने शब्दों को अकारादि क्रम से जोड़ा, लेकिन शब्दों के आगे अर्थ लिखने की बजाय परिभाषाएं लिख दीं। ऐसा करने की वजह शायद यह थी कि शब्द का अर्थ ठीक से समझ में आ जाए। मिसाल के तौर पर 'सिगरेट' का अर्थ उन्होंने लिखा: 'सिगरेट कागज में लिपटा हुआ तंबाकू है, जिसकी एक तरफ धुआं होता है दूसरी तरफ बेवकूफ।'

सौजन्यता

काले और गोरों के भेद के खिलाफ लड़ने वाले महान नेता मार्टिन लूथर किंग एक बार किसी सार्वजनिक सभा में भाषण दे रहे थे। किसी प्रतिक्रियावादी श्रोता ने उन पर जूता दे माता। जूता किंग के पास पहुंचा ही था कि सभा में खलबली मच गयी। सभा के आयोजकों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं, मगर किंग अविचलित खड़े रहे।

उन्होंने जूते को बड़े प्यार से उठाया और बड़े ही प्यार से बोले, 'धन्य है वह देश, जिसके वासी अपने खिदमतगारों का इतना खयाल रखते हैं। पैदल चलने वाले मुझ तुच्छ सेवक के प्रति किन्हीं कृपालू सज्जन ने सचमुच बड़ी उदारता का परिचय दिया है, किंतु खेद है कि यह जूता सिर्फ एक पांव का है।'

थोड़ा रूककर वे फिर बोले, 'कृपालू सज्जन से मेरा विनम्र आग्रह है कि वह दूसरा जूता भी मुझे देने की कृपा करें । ऐसा करके सचमुच वह मुझे उपकृत करेंगे।'

लूथर किंग के मुंह से ऐसी बात सुनकर सभी स्तब्ध रह गये। थोड़ी ही देर बार मार्टिन लूथर किंग के जयजयकार से आसमान गूंज उठा।

चतुराई का पुरस्कार

राकेश 'चक्र', 90 शिवपुरी, मुरादाबाद

सुजान नामक व्यक्ति बड़ा चतुर और चालाक था। उसे यायावरी का बहुत शौक था। इसी कारण उसने अपना विवाह भी नहीं किया था। वह अपने देश का भ्रमण करते हुए दूसरे देश की राजधानी मायापुरी पहुंचा। वहां का राज विवेकहीन और अपनी धुन का पक्का था जो भी मुंह से बात निकल जाती, उसे तुरन्त ही करने का निर्णय ले लेता।

सुजान ने राजा के महल के पास ही किराये का एक कक्ष ले लिया। राजा जब भी अपनी चार घोड़ों की बग्घी पर सवार होकर भ्रमण पर नगर में निकलता वह तुरन्त ही राजा को झुककर प्रणाम करता। इस तरह प्रणाम करते हुए उसे एक वर्ष व्यतीत हो गया।

राजा ने वर्ष के अन्त में एक दिन उसका प्रणाम स्वीकार किया और उससे पूछा, ''भाई, आपका नाम क्या है? आप मुझे एक वर्ष से लगातार क्यों प्रणाम कर रहे हो? क्या आप मुझसे कोई पुरस्कार चाहते हो?''

उसने विनम्रता पूर्वक राजा से कहा, ''राजन न तो मुझे आपसे कोई पुरस्कार चाहिए और न ही किसी प्रकार की नौकरी या धन चाहिए। मेरा नाम सुजान है।''

''फिर आप मुझसे क्या चाहते हैं?'' राजा ने कहा।

''राजन, मैं केवल इतना चाहता हूं कि मुझे प्रतिदिन राजदरबार में आने की आज्ञा दी जाये तथा आपके सबसे निकट के आसन पर बैठने की अनुमति दी जाये और यदा-कदा आपके कान में कुछ कहने की आज्ञा चाहता हूं, जब मैं आपके कान की ओर झुकूं तब दरबार में सन्नाटा हो जाये।'' सुजान बड़ी चतुराई से बोला।

राजा ने अपनी धुन में उससे हां कर दी अर्थात उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। वह नित्य ही राजदरबार में जाने लगा।

उस देश के मन्त्रियों और राजदरबारियों ने सोचा कि यह व्यक्ति अवश्य ही किसी महत्वपूर्ण पद पर राजा ने तैनात किया है इसलिये वह यदा-कदा राजा की ओर झुककर कान में कुछ कहता है तथा राजा उसकी बात ध्यान से सुनकर अपना निर्णय देता है।

सम्पूर्ण राज्य में इस बात की चर्चा होने लगीं। अब तो राज्य के अधिकारी, सैनिक तथा अन्य व्यक्ति भी सुजान से सम्पर्क करते और अपना आवश्यक कार्य कराते, इसकी एवज में उसे धन आदि भेंट करते । इस तरह सुजान धन-धान्य से सम्पन्न होता गया।

राज्य का महामन्त्री इस व्यवस्था से बहुत अप्रसन्न रहने लगा, उसने सोचा कि जो रूपया-पैसा उसे घूस के रूप में मिलता था, अब वह सुजान को मिल रहा है। उसे सुजान से बहुत अधिक ईर्ष्या होने लगी और वह सुजान को राजदरबार से बाहर करने का उपाय सोचने लगा। उसे उपाय सोचते-सोचते कई दिन हो गए लेकिन महामन्त्री सुजान नामक व्यक्ति को बाहर निकलवाने में असमर्थ रहा।

एक दिन की बात है। महामन्त्री राजदरबार में भ्रमण पर थे, तभी उन्हें राज-दरबार का नाई मिला। वह बहुत चतुर और चालाक था। उसने महामन्त्री से पूछा, '' महामन्त्री जी आप कई दिन से चिन्तित और निराश हैं क्या मैं आपकी समस्या जान सकता हूं?''

महामन्त्री जी ने झल्लाते हुए कहा, ''तुम अपनी मर्यादा में रहकर बात करो। तुम्हें क्या मतलब कि मैं चिन्तित और निराश हूं।''

लेकिन नाई पर झल्लाने का कोई असर नहीं हुआ। उसने बार-बार महामन्त्री से वही प्रश्न पूछा क्योंकि महामन्त्री के बाल भी वही काटता था।

महामन्त्री को नाई के बार-बार आग्रह करने पर अपनी समस्या बतानी पड़ी।

महामन्त्री ने उससे कहा, ''अब मैंने तुम्हें समस्या तो बता दी है, अब इसका निदान भी बताओ।''

नाई प्रसन्न होते हुए बोला, ''महामन्त्री जी इस समस्या का उपाय मेरे पास है, इसे आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए, मैं उस अपरिचित परदेसी को निकलवाकर ही दम लूंगा।''

नाई के उत्तर देने पर महामन्त्री थोड़ा आश्वस्त हुआ।

अगले दिन वह नाई राजा की हजामत बनाने गया। उसने उत्सुकतावश कहा, ''महाराज, ये क्या विचित्र नहीं लगता कि एक अजनबी परदेसी आपके इतने निकट बैठकर कान में फुसफुसाता है?''

राजा ने कहा, ''हां, यह ठीक है कि वह व्यक्ति मेरे पास प्रतिदिन राजदरबार में बैठता है तथा मैं उसे प्रतिदिन राजकोष से चांदी के दस रूपये दिलवाता हूं।''

नाई ने फिर चतुराई से कहा, ''महाराज, जो आप कह रहे हैं वह तो ठीक है ले.

किन वह व्यक्ति राजदरबार और प्रजा में तरह-तरह की अफवाहें फैलाता है कि जब वह राजा के समीप बैठता है तब राजा अपना कान उसके पास लाते हैं तो राजा के मुंह से तेज दुर्गन्ध आती है जो कि असहनीय होती है और तब उसे मजबूरन अपने अंगोछे से अपना मुंह और नाक को ढकना पड़ता है।''

यह सुनकर राजा को बहुत क्रोध आया और उसने नाई को शाबाशी देते हुए कहा, ''जो बात तुमने मुझे आज बताई है ये तो राज्य और मेरे हित में है। अभी तक मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया, अब मैं आगे से देखूंगा कि वह क्या करता है? यदि तुम्हारी बात सत्य हुई तो उसे दण्डित करूंगा और तुम्हें तुम्हारी राजभक्ति के लिए पुरस्कार दूंगा।''

नाई अपनी योजना के अनुसार शाम को ही सुजान नामक व्यक्ति से उसके घर मिलने गया। नाई उसकी सम्पन्नता देखकर अन्दर ही अन्दर ईर्ष्या करने लगा लेकिन उसे तो राजा से मुंह मांगा पुरस्कार जो लेना था। इसलिए चतुर नाई ने चतुर सुजान पर अपना तीर चलाते हुए कहा, ''श्रीमान आज जब मैं राजा साहब की हजामत बना रहा था तब राजा आपके बारे में मुझसे कुछ बातें कह रहें थे।''

सुजान ने बड़ी उत्सुकता से पूछा,'भाई, क्या कह रहे थे?'

नाई ने कहा, ''राजा कह रहे थे कि सुजान कितना अशिष्टाचारी और असम्य है कि जब वह मेरे कान के पास कुछ कहता है तो अपने मुंह से थूक आदि कान और गाल पर लगा देता है। वह चाहते हैं कि जब भी आप राजा साहब से बातचीत करें तब आप अपना मुंह अंगोछा आदि से ढांप लिया करें।''

सुजान ने यह बात बताने के लिऐ नाई को पांच रूपये चांदी के दिये और कहा, ''भाई, आपको यह बातें बताने के लिए धन्यवाद देता हूं और कल से ही मैं इस बात का पालन करूंगा।''

नाई खुशी खुशी अपने घर चल दिया।

अगले दिन राजा का दरबार लगा तो पूर्व की तरह सुजान को राजा के अति निकट वाले आसन पर बैठाया गया। जैसे ही राजा ने अपना मुंह उसकी ओर किया कि जैसे राजा उससे कुछ कहना चाहते हैं, तुरन्त ही सुजान ने अपना मुंह अंगोछा से ढक लिया। राजा को यह देखकर बहुत क्रोध आया और राजदरबार की समाप्ति के बाद सुजान से कहा, ''ये लो अपना राजाज्ञा पत्र जिसे लेकर तुम राजकीय कोष से अपना भत्ता प्राप्त कर सकते हो।''

सुजान ने सिर झुकाकर राजा को प्रणाम करते हुए राजाज्ञा पत्र ले लिया, जिस पर लिखा हुआ था कि जो कोई

भी व्यक्ति इस पत्र को लेकर राजकीय कोष आए तभी उस व्यक्ति की नाक काट ली जाये और तत्पश्चात् उसे दस रूपये चांदी के दे दिये जाये।

सुजान ने पत्र में लिखी बातें पढ़ लीं और वह उस नाई की तलाश करने लगा। संयोगवश दूसरी ओर से वह नाई आता दिखाई दिया। उस नाई ने सुजान को प्रणाम किया। तभी सुजान ने प्रसन्न होते हुए कहा, ''ये लो राजाज्ञा पत्र जो मुझे प्रतिदिन मिलता है। तुम इसे लेकर राजकोष जाओ और चांदी के दस रूपये प्राप्त कर लो। तुमने जो मुझे मुंह ढकने की सलाह दी थी उसी के पुरस्कार स्वरूप यह राशि स्वीकार कर लो।''

नाई ने खुशी-खुशी राजाज्ञा पत्र स्वीकार कर लिया और सुजान का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हुए वह राजकोष की ओर गया। जैसे की राजकोष के अधिकारी को नाई ने राजाज्ञा पत्र भेंट किया, वैसे ही नाई की नाक काट दी गयी और दस रूपये उसके हाथ पर रख दिये गये।
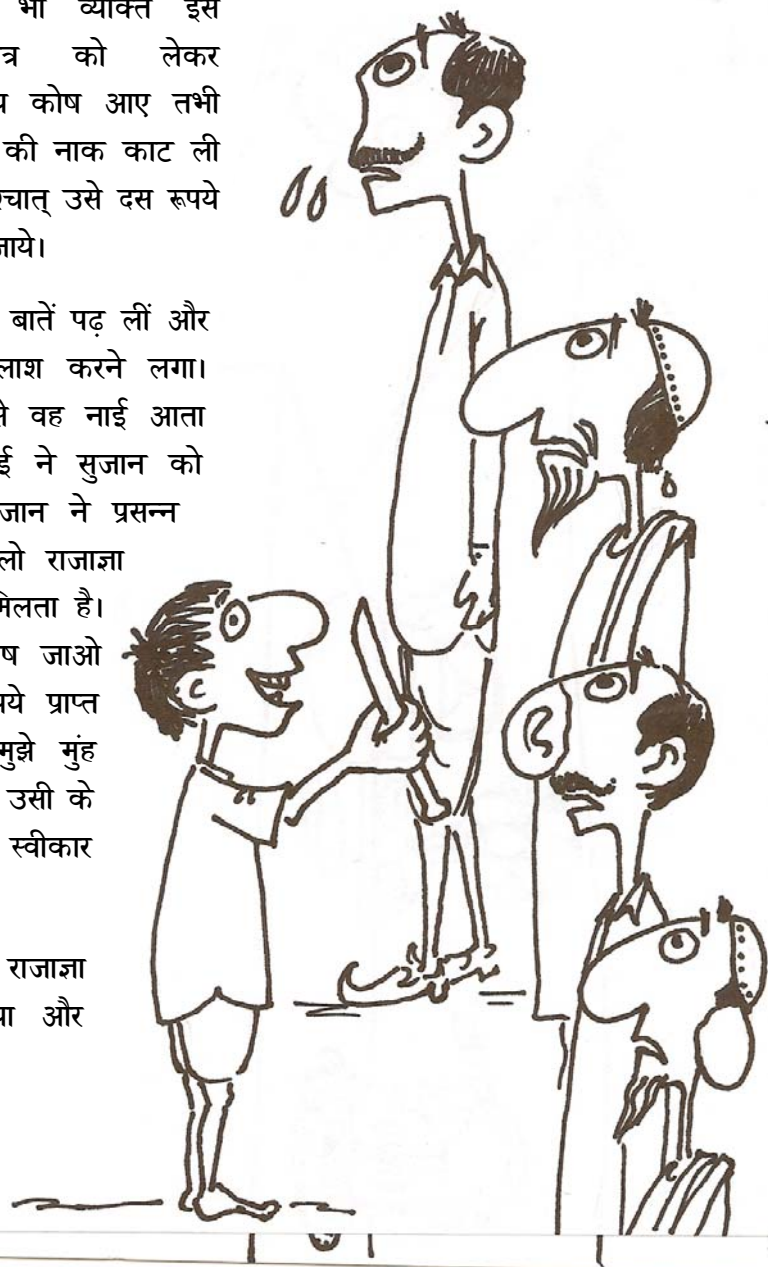
इस प्रकार सर्पदंश मानने वाला स्वयं ही दंश का शिकार हो गया।

आओ हंसी!!!! ह......

अखबार के सम्पादक ने रिपोर्टर को डांट पिलाई कि वह समाचार भेजते समय नाम भूल जाता है। अब से यदि उसने नाम नहीं भेजे तो उसे निकाल दिया जाएगा।

कुछ दिन बाद सम्पादक को समाचार प्राप्त हुआ– प्रांत के उत्तरी भाग में भयंकर तूफान आया। बिजली खम्भे पर गिरी और उससे सटकर खड़ी भैंस मर गई। भैंस का नाम सुन्दरिया था।

❖ ❖ ❖

एक आदमी साइकिल पर चढ़ा हुआ आया और सीमा पार करने लगा। उसकी साइकिल पर दो बोरे लदे थे। चौकी के सिपाहियों ने पूछा – ''इसमें क्या है?''

वह बोला –''रेत।''

बोरे पलट दिए गए। उनमें सचमुच रेत निकला। काफी टटोला गया, कुछ नहीं था। इजाजत मिलने पर उसने रेत भरा और बोरे लादकर सीमा पार चला गया। अगले दिन वह फिर दो बोरे लेकर आया। चौके के सिपाहियों ने पूछा, बोरे पलटे और फिर रेत पाया। आराम से रेत भरकर वह फिर चला गया। पांच महीने तक यह किस्सा रोजाना दुहराता रहा। एक दिन वह नहीं आया तो सिपाहियों को बड़ा अचम्भा हुआ। अचानक एक सिपाही को वह बाजार में मिल गया। सिपाही ने उससे पूछा– ''यार, तूने हमें पागल बना दिया। हम यह तो जानते थे कि तू कोई चीज स्मगल कर रहा है, पर तुझे पकड़ नहीं पाए। अब तो बता दे कि तू क्या स्मगल कर रहा था?''

''साइकिले।''

❖ ❖ ❖

जाड़े की चर्चा छिड़ी तो तिब्बतवासी बोला– ''जो जाड़ा हमारे यहां पड़ता है, वह अन्य कहीं नहीं मिल सकता। एक जाड़े का मुझे ध्यान है। पहाड़ी पर चरती भेड़ पैर फिसल कर नीचे गिरने लगी। पर जाड़े के मारे रास्ते में वह बर्फ बनकर हवा में टंगी रह गई।''

लेकिन गुरुत्वाकषर्ण के सिद्धान्त से ऐसा होना असम्भव है।''

''मियां, गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त भी जम चुका था।''

❖ ❖ ❖

एक आदमी ने पी0 सी0 ओ0 में फोन करने से पहले वहां बैठे आदमी को दो

झापड़ रसीद कर दिये। हक्का-बक्का होकर उसने पूछा-''तुमने मुझे क्यों मारा?''तो आदमी ने कहा-''खुद ही तो लिख रखा है-नम्बर डायल करने से पहले दो लगाएं।''

❖ ❖ ❖

बाप भी उसी यूनिवर्सिटी से निकला था और अपने को बहुत बुद्धिमान समझता था। बेटे ने पहला साल समाप्त किया और घर तार भेजा कि वह दूसरे नम्बर पर पास हुआ। बाप ने चिट्ठी लिखी कि वह द्वितीय क्यों आया, प्रथम क्यों नहीं आया। अवश्य खेलता रहा होगा।

बेटे को बहुत निराशा हुई। खैर, अगले साल उसने और कस कर मेहनत की और इस बार वह प्रथम आया। पुरस्कारों से लदा तथा गर्व से भरा वह अपने घर पहुंचा। आज पिताजी को कितना हर्ष होगा।

जब परिणाम बताया गया तो बाप शान्ति से कुछ मिनट तक अपने बेटे को परखता रहा। फिर कन्धे सिकोड़ कर बोला- ''तुम प्रथम आये हो? ओह, युनिवर्सिटी का स्टैण्डर्ड कितना नीचा गिर गया है!''

परीक्षा की कापियां जांचते समय प्रोफेसर ने एक कापी पर लिखा पाया- ''इस प्रश्न का उत्तर केवल भगवान् जानता है।'' उसने लिख दिया- ''भगवान् को 10 में से 10 अंक दिये जाते हैं, और तुम्हें शून्य।''

❖ ❖ ❖

एक साहब अपनी कार से देहली जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक विद्यार्थी दिखाई देने वाले लड़के से पूछा कि देहली कितनी दूर है।

''जिस ओर आप जा रहे हैं, उधर से तो 25, 000 किलोमीटर दूर है। हां, यदि वापिस लौट कर अगले मोड़ पर दाहिने घूम जायें तो पांच किलोमीटर है।''

❖ ❖ ❖

क्लास का ग्रुप फोटोग्राफ खिंचवाया गया था, और अध्यापक लड़कों को फुसलाने की कोशिश कर रहा था कि वे फोटो की एक एक प्रति खरीद लें।

''जब तुम सब बड़े हो जाओगे तो अपने पुराने साथियों के बारे में सोचना। कितना अच्छा लगेगा! यह राजकृष्ण है, अब तो उसके चार बच्चे हो गये हैं। और यह मनोज है, आजकल विलायत में पढ़ रहा है।.............

कमरे के पीछे की तरफ से आवाज आई- ''ये प्रोफेसर साहब हैं, बेचारे अब तक मर गये होंगे।''
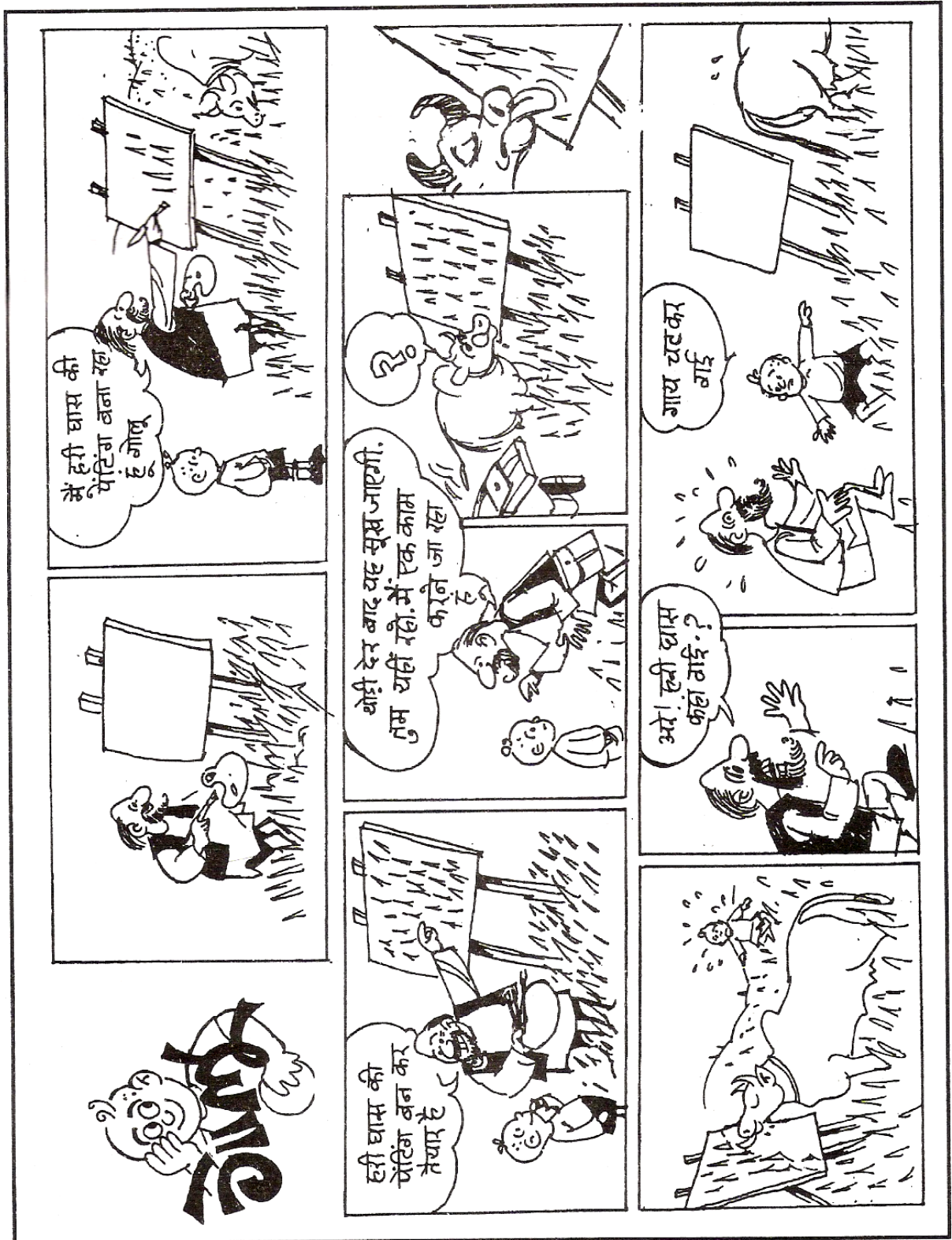
रचनाकार: रामबाबू, अनुराग ट्रस्ट से धन्यवाद सहित

रात में सितारे किस किस तरह अपना पथ पूरा करते हैं? इस चित्र को लेने के लिये फोटोग्राफर ने अपने कैमरे को करीब 4 घंटे के लिये रात में आकाश की ओर करके खुला छोड़ दिया। चार घंटे में पृथ्वी अपने स्थान से घूम गई। लेकिन देखने वाले कैमरे को तारे अपनी जगह से खिसकते हुए रेखाओं की तरह नज़र आए। ध्रुव तारा, जो लगभग पृथ्वी की घूमने की धुरी की सीध में है, सबसे कम हिला हुआ, सबसे चमकदार छोटी सी रेखा के रूप में दिख रहा है।

10/-

हम किसी से कम नहीं!